सफलता की सीढ़ियाँ

प्रेरणादायक कहानियों का संग्रह

संदीप नागर

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Sandeep Nagar 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-601-5

Cover Design: Aafiya Saifi
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: September 2026

विषय सूची

अभिस्वीकृति v
किताब के बारे में vii
कहानी 1: सफलता के सिद्ध तरीके 1
कहानी 2: मन का हो तो अच्छा, न हो तो और भी अच्छा 3
कहानी 3: सीखना कभी बंद न करें 5
कहानी 4: कोशिश ही सफलता की पहली सीढ़ी है 7
कहानी 5: अवसर की पहचान 9
कहानी 6: अपनी असली ताकत पहचानिए 11
कहानी 7: रावण क्यों हारा? 12
कहानी 8: प्रोत्साहन की शक्ति 13
कहानी 9: सच्ची अमीरी 15
कहानी 10: सच्ची महानता सादगी में है 17
कहानी 11: हालात नहीं, फैसले महत्वपूर्ण हैं 18
कहानी 12: मंज़िल पर नज़र 20
कहानी 13: अवसर देखने की दृष्टि 22
कहानी 14: इच्छा शक्ति की ताकत 24
कहानी 15: सही समय पर सही रणनीति 26
कहानी 16: मेहनत और किस्मत 27
कहानी 17: हार नहीं मानी 29
कहानी 18: हार मत मानो 31
कहानी 19: सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों पर ध्यान दें 34
कहानी 20: सफल होने का मजबूत इरादा रखिए 37
कहानी 21: एक ही दुख, बार-बार क्यों? 39
कहानी 22: जब तक जीवन है तब तक संघर्ष है 41
कहानी 23: कंपटीशन कहाँ है? 43
कहानी 24: हार मान लेने से हार होती है 45

कहानी 25: सफल और असफल में फर्क 47
कहानी 26: हर दिन प्रेरणा क्यों जरूरी है? 48
कहानी 27: डर से बड़ी कोई मुश्किल नहीं..50
कहानी 28: अपनों का साथ 51
कहानी 29: बाधा नहीं, लक्ष्य देखो..53
कहानी 30: नजर सिर्फ लक्ष्य पर..55
कहानी 31: पहचान आपके काम से बनती है 57
कहानी 32: अपने मन की राह चुनिए 59
कहानी 33: अपनी वैल्यू बढ़ाइए...62
कहानी 34: कम्फर्ट जोन से बाहर निकलें 65
कहानी 35: जीवन में लक्ष्य क्यों जरूरी है 67
कहानी 36: दर्द तो सहना ही पड़ेगा..69
कहानी 37: नकारात्मकता को अंदर मत आने दो 71
कहानी 38: सफलता की कीमत 73
कहानी 39: पीछे मुड़कर मत देखो..76
कहानी 40: अपना रिकॉर्ड खुद तोड़ो 78
कहानी 41: कुछ तो लोग कहेंगें, लोगों का काम है कहना..........................80
कहानी 42: अपनी जड़ों को मत भूलो 82
कहानी 43: अपनी धार तेज करो 83
कहानी 44: छोटी-छोटी बातों को भूलना सीखो...85
कहानी 45: सफलता की भूख 87
कहानी 46: संघर्ष हमें मजबूत बनाता है...89
कहानी 47: तीस सेकंड के पीछे तीस साल..91
कहानी 48: रस्सी नहीं, सोच बाँधती है 93
कहानी 49: हीरों की तलाश...95
कहानी 50: जानते हो, तो फिर करते क्यों नहीं?..97
संदर्भ एवं प्रेरणा 99
सूचना 101

अभिस्वीकृति

मैं अपने उन सभी मित्रों व सहयोगियों का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ, जिन्होंने मेरी कहानियाँ सुनीं और उनमें से सबसे बेहतरीन एवं प्रेरणादायक कहानियाँ चुनने में मेरी मदद की।

मैं विशेष तौर पर अपने परिवार का धन्यवाद करना चाहूँगा, जिसने इस पुस्तक के दौरान मुझे लगातार प्रोत्साहित किया और मेरा हौसला बढ़ाया।

ये सभी कहानियाँ अलग-अलग जगहों से इकट्ठी की गई हैं, जैसे - अखबार, पत्रिकाएँ, यूट्यूब वीडियो, अन्य वक्ताओं के अनुभव और मेरे खुद के जीवन में घटी घटनाएँ।

किताब के बारे में

यह पुस्तक उन लोगों के लिए एक तोहफा है, जिनको अपने जीवन का संघर्ष बहुत कठिन लगता है। इस पुस्तक में ऐसी-ऐसी प्रेरणादायक कहानियाँ हैं, जिनको पढ़कर आप प्रेरणा से भर उठेंगे।

मैंने इस पुस्तक के माध्यम से सागर को गागर में डालने का प्रयास किया है। कई वर्षों तक पुस्तकें पढ़ने के बाद और कई वर्षों तक सफल लोगों को सुनने के बाद जितना भी ज्ञान मैं ले पाया हूँ, मैं उस ज्ञान को इस पुस्तक के माध्यम से आपके साथ साझा कर रहा हूँ, ताकि आप भी इसका लाभ उठा सकें।

इस पुस्तक की हर कहानी से आपको कुछ न कुछ सीखने को मिलेगा। अगर आप उस सीख को अपने जीवन में उतारते हैं, तो दुनिया की कोई भी ताकत आपको सफल होने से नहीं रोक सकती।

अगर इस पुस्तक को पढ़कर किसी एक व्यक्ति के भी जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आता है, तो मैं समझूँगा कि मेरा यह कार्य सफल रहा।

कहानी 1

सफलता के सिद्ध तरीके

अमेरिका के प्रसिद्ध सफलता शोधकर्ता एम. आर. कोप कॉपमेयर (M. R. Kopmeyer) ने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा सफलता का अध्ययन करने में लगाया। कहा जाता है कि उन्होंने लगभग छह हजार किताबें पढ़ीं और उनसे प्राप्त अनुभवों के आधार पर सफलता के एक हजार सिद्धांत संकलित किए।

एक अवसर पर उनसे पूछा गया, "यदि आपको एक हजार सफलता के सिद्धांतों का सार केवल एक वाक्य में बताना हो, तो आप क्या कहेंगे?"

कोप कॉपमेयर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "सफलता के लिए उन्हीं तरीकों का उपयोग करें, जो पहले से सिद्ध हो चुके हैं।"

उन्होंने समझाया कि अगर उनके एक हजार सफलता के सिद्धांतों का सार निकाला जाए, तो यही एक वाक्य निकलेगा कि सफलता के जो तरीके सिद्ध हो चुके हैं, हमें उन्हीं तरीकों का उपयोग करना चाहिए। इसका मतलब है कि हमें उन्हीं लोगों से सीखना चाहिए, जो पहले से ही सफल हो चुके हैं।

उन्होंने आगे कहा कि जीवन बहुत छोटा है। अगर हर व्यक्ति केवल अपनी गलतियों से सीखने की कोशिश करेगा, तो समय कम पड़ जाएगा। इसलिए बुद्धिमानी इसी में है कि हम दूसरों के अनुभवों और सफल लोगों के सिद्ध तरीकों से सीखें।

उन्होंने यह भी कहा कि सफल लोगों की एक बहुत अच्छी आदत होती है कि सफल लोग हमेशा खुद से ज्यादा सफल लोगों से सीखते हैं, जबकि असफल लोग हमेशा ये सोचते हैं कि उन्हें सब कुछ पहले से ही पता है।

इसी बात को समझाने के लिए उन्होंने एक उदाहरण दिया। अगर किसी व्यक्ति को रसोई में भेज दिया जाए और वहाँ उसे चाकू, सब्जियाँ, बर्तन, गैस और अन्य सभी जरूरी सामान दे दिया जाए, लेकिन उसे खाना बनाना न आता हो, तो वह क्या करेगा?

स्वाभाविक उत्तर है कि वह किसी विश्वसनीय विधि (रेसिपी) का सहारा लेगा और उसी के अनुसार भोजन बनाएगा।

ठीक इसी प्रकार, यदि जीवन में सफलता प्राप्त करनी है, तो उन्हीं तरीकों का उपयोग करें, जिन्हें उपयोग करके सफल लोग सफल हो चुके हैं।

सीख

- सफलता के जो तरीके सिद्ध हो चुके हैं, उन्हीं का उपयोग करें।
- सफल लोगों से सीखें, क्योंकि सफल लोग हमेशा खुद से ज्यादा सफल लोगों से सीखते हैं।

कहानी 2

मन का हो तो अच्छा, न हो तो और भी अच्छा

अमिताभ बच्चन जब अपने बुरे दौर से गुजर रहे थे और उनको कोई अच्छा काम भी नहीं मिल रहा था। एक मशहूर रेडियो चैनल में उन्होंने नौकरी के लिए इंटरव्यू दिया, लेकिन उन्होंने अमिताभ बच्चन जी को यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि आपकी आवाज अच्छी नहीं है। वे उन दिनों काफी निराश चल रहे थे।

वे बताते है कि एक दिन वे अपने पिताजी यानी हरिवंश राय बच्चन जी के पास बैठे, तो उनके पिताजी ने उनसे कहा, "बेटा, मन का हो तो अच्छा और अगर न हो तो और भी अच्छा।" बाबूजी अक्सर यह बात उनसे कहते रहते थे। शुरू-शुरू में तो यह बात अमिताभ जी को समझ ही नहीं आई कि अगर मन का न हो तो यह और भी अच्छा कैसे है।

फिर धीरे-धीरे अमिताभ जी अपने जीवन में आगे बढ़े और फिल्मी दुनिया में आए। वहाँ भी उन्हें बहुत ही ज्यादा संघर्ष करना पड़ा। उनकी बहुत सी फिल्में लगातार फ्लॉप साबित हुईं। बहुत ही ज्यादा संघर्ष करने के बाद उनकी फिल्म *जंजीर* आई। जंजीर से वे रातों-रात सुपरस्टार बन गए और उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

फिर वे बाबूजी की बात का अर्थ समझ गए कि मन का हो तो अच्छा और अगर मन का न हो तो और भी अच्छा, क्योंकि अगर आपके मन का नहीं हो रहा है, तो इसका मतलब है कि वह ईश्वर के मन का हो रहा है। अगर उस वक्त उनकी नौकरी उस रेडियो कंपनी में लग जाती, तो शायद आज वे इतने बड़े महानायक नहीं होते।

और दूसरी तरफ पंकज त्रिपाठी जी को आज कौन नहीं जानता। पंकज त्रिपाठी जी आज पूरी फिल्मी दुनिया में एक जाना-माना चेहरा हैं। पंकज त्रिपाठी जी ने *मिर्जापुर* वेब सीरीज में कालीन भैया के रूप में बहुत नाम कमाया। अपने एक इंटरव्यू में वे बताते हैं कि जब मैं पढ़ रहा था, तब मेरे पिताजी एक ट्रैक्टर लेना चाहते थे। मगर पैसे न होने के कारण वे ट्रैक्टर नहीं खरीद पाए, जिसका उस वक्त उनको बहुत ही ज्यादा दुख हुआ था।

मगर अब वे कहते हैं कि हम उस वक्त ट्रैक्टर नहीं खरीद पाए, यह अच्छा ही हुआ। क्योंकि अगर मेरे पिताजी उस वक्त ट्रैक्टर खरीद लेते, तो शायद मैं आज भी ट्रैक्टर ही चला रहा होता और किसानी कर रहा होता।

इसलिए, मन का हो तो अच्छा और अगर मन का न हो तो और भी अच्छा।

सीख

- मन का हो तो अच्छा और अगर मन का न हो तो और भी अच्छा।
- अगर आपने कोई काम करने की कोशिश की और वह नहीं हो पाया हो, तो निराश न हों। हो सकता है कि वह ईश्वर के मन का हो रहा हो। शायद ईश्वर ने आपके लिए कुछ और ज्यादा अच्छा और बेहतर सोचकर रखा हो।

कहानी 3

सीखना कभी बंद न करें

एक गुरु अपने शिष्यों को तलवारबाज़ी की शिक्षा देते थे। उनके सभी शिष्य लगन से अभ्यास करते थे, लेकिन उनमें से एक शिष्य खुद को सबसे श्रेष्ठ मानने लगा था। उसको यह विश्वास हो गया था कि अब उसने तलवारबाज़ी की सारी विद्या सीख ली है और अब उसे आगे कुछ भी सीखने की जरूरत नहीं है।

एक दिन उसने अपने गुरु को ही मुकाबले की चुनौती दे दी।

गुरु ने मुस्कुराते हुए कहा, "वत्स, अभी तुम्हें और भी बहुत कुछ सीखने की जरूरत है।"

लेकिन शिष्य अपने अहंकार में डूबा हुआ था। उसने गुरु की बात नहीं मानी। अंततः गुरु ने चुनौती स्वीकार कर ली।

मुकाबले से एक दिन पहले गुरु एक लोहार के पास गए और अपने लिए दस फुट लंबी म्यान बनवाकर ले आए।

जब शिष्य को यह पता चला, तो उसने भी अपने लिए दस फुट लंबी म्यान और उसी के आकार जितनी लंबी तलवार बनवा ली।

मुकाबले का दिन आया। जैसे ही मुकाबला शुरू हुआ, गुरु ने अपनी दस फुट लंबी म्यान में से तुरंत एक सामान्य आकार की तलवार निकाली और झट से उसे शिष्य की गर्दन पर रख दिया। दूसरी ओर, शिष्य अपनी दस फुट लंबी म्यान में से अपनी लंबी तलवार को निकालने में ही उलझा रह गया।

तब उसे अपनी भूल का एहसास हुआ। दोस्तों, गुरु ने केवल दस फुट लंबी म्यान बनवाई थी, तलवार नहीं। लेकिन शिष्य ने दस फुट लंबी म्यान और उसी के आकार जितनी लंबी तलवार, दोनों बनवाई थीं।

ऐसी ही सीख हमें भारत के महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर के जीवन से भी मिलती है।

अनेक इंटरव्यू में सचिन तेंदुलकर ने अनेक अवसरों पर अपने कोच रमाकांत आचरेकर के मार्गदर्शन का उल्लेख किया है। वे बताते हैं कि उनके कोच हमेशा उन्हें एक विद्यार्थी की तरह सीखने की प्रेरणा देते थे। उनका मानना था कि जिस दिन खिलाड़ी यह सोचने लगे कि अब उसे सब कुछ आ गया है, या फिर अब तो वह बहुत बड़ा खिलाड़ी बन गया है और अब उसे कुछ भी सीखने की जरूरत नहीं है, उसी दिन उसकी प्रगति रुक जाती है।

इसी सोच के कारण सचिन अपने पूरे क्रिकेट करियर में लगातार सीखते रहे, अभ्यास करते रहे और स्वयं को बेहतर बनाते रहे। यही निरंतर सीखने की आदत उन्हें क्रिकेट इतिहास के महानतम खिलाड़ियों में स्थान दिलाती है।

सीख

- अगर आप अपने कार्य क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं, तो जितना ज्यादा सीख सकते हैं, उतना ज्यादा सीखें। जितना ज्यादा आप सीखते रहेंगे, अपने कार्य क्षेत्र में आप उतने ही ज्यादा आगे बढ़ते रहेंगे।
- सफल लोग हमेशा सीखते रहते हैं और आगे बढ़ते रहते हैं, जबकि असफल लोग सोचते हैं कि वे पहले से ही सब कुछ जानते हैं।

कहानी 4

कोशिश ही सफलता की पहली सीढ़ी है

जब मैं दसवीं कक्षा में था, एक दिन ट्यूशन वाले सर हमें पढ़ा रहे थे। हम सभी औसत विद्यार्थी थे और सभी के लगभग 50–60 प्रतिशत अंक ही आते थे।

उस दिन हमारे ट्यूशन वाले सर ने हमसे पूछा, "क्या तुम में से कभी कोई अपनी कक्षा में प्रथम आया है?"

हम सभी औसत विद्यार्थी थे। हम सभी एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे, क्योंकि 50–60 प्रतिशत से ज्यादा अंक हममें से किसी के भी नहीं आते थे। हम सभी ने मना कर दिया।

फिर सर ने पूछा, "क्या आप लोगों को पता है कि आप कभी अपनी कक्षा में प्रथम क्यों नहीं आते हो?"

हम सभी एक-एक करके बोलने लगे। किसी ने कहा, "सर, हम पढ़ाई में कमजोर हैं।" दूसरे ने बोला, "सर, जो भी याद करते हैं, भूल जाते हैं।" तीसरे ने कहा, "सर, पढ़ाई में मन ही नहीं लगता।"

एक-एक करके सभी ने कोई न कोई वजह बता दी कि वे कक्षा में प्रथम क्यों नहीं आ पाते हैं।

इस बात पर सर ने हमसे पूछा, "क्या आप लोगों में से किसी ने कभी अपनी कक्षा में प्रथम आने की कोशिश की है?"

हम सभी सोचने लगे कि सर ने यह कैसा प्रश्न पूछ लिया। कुछ देर बाद सभी ने एक स्वर में कहा, "नहीं सर”,

सर बोले, "इसीलिए आप लोगों में से कभी कोई प्रथम नहीं आया, क्योंकि आपने कभी प्रथम आने की कोशिश ही नहीं की।"

"जब तक तुम किसी काम को करने की कोशिश ही नहीं करोगे, तो वह काम कैसे हो पाएगा? जो विद्यार्थी आपकी कक्षा में प्रथम आते हैं, वे प्रथम आने की कोशिश करते हैं। आप लोगों ने कभी अपनी कक्षा में प्रथम आने की कोशिश ही नहीं की, इसलिए आप कभी प्रथम नहीं आ पाए। और वे विद्यार्थी प्रथम आने के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं, इसलिए वे प्रथम आते हैं।"

सीख

- ज्यादातर लोग सिर्फ इसलिए जीवन में पीछे रह जाते हैं, क्योंकि वे कभी आगे निकलने की कोशिश ही नहीं करते।
- ज्यादातर लोग सिर्फ इसलिए गरीब रह जाते हैं, क्योंकि वे कभी अमीर बनने की कोशिश ही नहीं करते।
- अगर हम किसी चीज को पाने की कोशिश ही नहीं करेंगे, तो वह चीज हमें कैसे मिल पाएगी? इसलिए आप अपने जीवन में जो भी चीज पाना चाहते हैं, उसे पाने की कोशिश जरूर करें।

कहानी 5

अवसर की पहचान

एक नगर में एक बुद्धिमान और सफल व्यापारी रहता था। लोग दूर-दूर से उसके पास व्यापार, धन और सफलता के बारे में सलाह लेने आते थे। कहा जाता था कि उसने अपने जीवन में कई ऐसे अवसर पहचाने थे, जिन्हें दूसरे लोग सामान्य समझकर छोड़ देते थे।

एक दिन एक उत्साही युवक उसके पास पहुँचा। उसने विनम्रता से कहा, "गुरुजी, मैं भी जीवन में सफल और समृद्ध बनना चाहता हूँ। कृपया मुझे सफलता का कोई ऐसा रहस्य बताइए, जो मेरी पूरी ज़िंदगी बदल दे।"

व्यापारी मुस्कुराया, लेकिन उसने तुरंत कोई उत्तर नहीं दिया।

उसने अपनी मेज़ की दराज़ खोली, उसमें से एक मूल्यवान हीरा निकाला और युवक की ओर बढ़ाते हुए कहा, "पहले इसे रख लो।"

युवक ने हीरे को देखा और कहा, "नहीं गुरुजी, मुझे इसकी जरूरत नहीं है। आप बस मुझे सफलता का रहस्य बता दीजिए।"

व्यापारी ने एक बार फिर कहा, "इसे अपने पास रख लो। शायद आगे चलकर यह तुम्हारे काम आ जाए।"

लेकिन युवक ने फिर मुस्कुराकर मना कर दिया। अब व्यापारी ने हीरा वापस अपनी मेज़ पर रख दिया और शांत स्वर में कहा, "यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर था।"

युवक कुछ समझ नहीं पाया। उसने आश्चर्य से पूछा, "मैं समझा नहीं, गुरुजी।"

व्यापारी बोला, "तुम सफलता का रहस्य जानने आए थे, लेकिन जब सफलता ने एक छोटे-से अवसर के रूप में तुम्हारे सामने दस्तक दी, तब तुमने बिना समझे उसे ठुकरा दिया।"

व्यापारी ने आगे कहा, "मैं तुम्हें अपनी सफलता के रहस्य के बारे में ही बता रहा था। बेटा, मेरी सफलता का यही रहस्य है कि मैं कभी भी कोई भी अवसर नहीं छोड़ता हूँ। आज अमीर बनने का अवसर तुम्हारे पास भी था। तुम चाहते तो हीरा लेकर अमीर बन सकते थे, लेकिन तुमने इस मौके को गँवा दिया। अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं हीरा ले लेता और अमीर बन जाता। बस सफलता का रहस्य यही है कि कभी भी अगर कोई मौका दिखाई दे, तो उसे तुरंत लपक लो और आगे बढ़ो।"

सीख

- कभी भी मौकों को न छोड़ें। कभी भी कोई अच्छा अवसर दिखाई दे, तो उसे तुरंत लपक लें।

कहानी 6

अपनी असली ताकत पहचानिए

एक बार एक शेरनी का छोटा-सा बच्चा अपने झुंड से बिछड़ गया और भेड़ों के झुंड में जा मिला। वह भेड़ों के साथ ही रहने लगा। वह भेड़ों के बच्चों के साथ ही खेलता और भेड़ों के बच्चों के साथ ही खाता-पीता था। वह धीरे-धीरे भेड़ों के बच्चों के साथ ही बड़ा हुआ और उनके साथ ही रहा, इसलिए वह भी अपने आपको भेड़ ही समझता था।

एक दिन भेड़ों के उस झुंड पर दो भेड़ियों ने हमला कर दिया। सारी भेड़ें अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगीं। वह शेर का बच्चा, जो अब बड़ा हो चुका था, वह भी भाग रहा था। गलती से वह शेर उन दो भेड़ियों के हाथ लग गया और उन भेड़ियों ने उस शेर का शिकार कर लिया और उसे मारकर खा गए।

दोस्तों अगर वह शेर चाहता, तो उन दो भेड़ियों से आराम से अपनी जान बचा सकता था, लेकिन उसने कभी अपनी असली ताकत को पहचाना ही नहीं। उसने पूरी ज़िंदगी एक भेड़ की तरह ही जी और वह एक भेड़ की तरह ही मर गया।

सीख

- अपनी असली ताकत को पहचानिए। कई बार हमारी सबसे बड़ी कमजोरी यह नहीं होती कि हमारे पास प्रतिभा नहीं है, बल्कि यह होती है कि हमें अपनी प्रतिभा का एहसास ही नहीं होता।
- अगर आपके अंदर भी कोई शेर छिपा है, तो उसे पहचानिए। आत्मविश्वास के साथ अपने जीवन का नेतृत्व कीजिए और अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कीजिए।

कहानी 7

रावण क्यों हारा?

बचपन में मेरे दादाजी मुझे रामायण से जुड़ी अनेक प्रेरक बातें सुनाया करते थे। उनकी सुनाई हुई कहानियाँ केवल धार्मिक प्रसंग नहीं होती थीं, बल्कि जीवन जीने की सीख भी देती थीं। उन्हीं में से एक सीख आज भी मेरे मन में गहराई से बसी हुई है।

एक दिन दादाजी ने मुझे रामायण की कहानी सुनाई। दादाजी ने बताया कि रावण एक अत्यंत शक्तिशाली, पराक्रमी और विद्वान राजा था। वह आयु में भगवान श्रीराम से बहुत बड़ा था। उसके पास अपार धन-संपत्ति, वैभव और एक विशाल सेना थी। उसकी लंका भी अत्यंत समृद्ध और वैभवशाली थी। इतना शक्तिशाली और वैभवशाली होने के बाद भी रावण अंततः भगवान श्रीराम से हार गया था।

जब मैंने उनसे पूछा कि ऐसा क्यों हुआ, तब उन्होंने बड़े प्यार से मुझे उत्तर दिया कि सिर्फ और सिर्फ इसलिए, क्योंकि भगवान श्रीराम का भाई उनके साथ था और रावण का भाई उसके खिलाफ था।

सीख

- बिना भाई के साथ के जब रावण भी हार सकता है, तो हम किस घमंड में हैं? इसलिए सदा परिवार के साथ चलते रहिए, सदा विजयी होते रहिए।

कहानी 8

प्रोत्साहन की शक्ति

एक छोटे से गाँव में एक आठ वर्ष का बालक, जो पढ़ाई में बहुत ही ज्यादा कमजोर था। एक दिन वह स्कूल से घर लौटा और अपनी माँ को एक बंद लिफाफा देते हुए बोला, "माँ, यह पत्र मेरे शिक्षक ने आपको देने के लिए कहा है।"

माँ ने पत्र खोला। और बेटे को पढ़कर सुनाने लगी, उसमें लिखा था, "आपका बेटा पढ़ाई में बहुत ही ज्यादा होशियार है, इसका दिमाग बहुत ही तेज है, हम और हमारा विद्यालय इस लायक नहीं है कि इसको अच्छी शिक्षा दे पाए, आप अब इसको हमारे विद्यालय में मत भेजना, कृपया करके इसका दाखिला किसी दूसरे विद्यालय में करवा दीजिए या फिर इसके लिए कोई अन्य विवस्था करे ।"

माँ ने मुस्कुराकर कहा, "बेटा, तुम्हारे शिक्षक ने लिखा है कि तुम बहुत प्रतिभाशाली हो। उनका मानना है कि तुम्हारी क्षमता सामान्य बच्चों से अलग है। इसलिए अब मैं खुद तुम्हारी पढ़ाई में तुम्हारी मदद करूँगी।"

माँ के इन शब्दों ने बच्चे के मन में आत्मविश्वास जगा दिया। उसने पहले से ज्यादा मेहनत करनी शुरू कर दी। धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ता गया और वह अपने जीवन में सफल होता चला गया।

कई वर्षों बाद, जब वह युवक अपने पुराने सामान को देख रहा था, तो उसे वही पुराना पत्र मिला। वह युवक बड़ी उकशुक्ता के साथ उस पत्र को पढ़ने लगा| जैसे ही उसने वो पत्र पढ़ा तो वो फूट-फूट कर रोने लगा। उस पत्र में लिखा था कि आपका बच्चा मंदबुद्धि है और हमारे विद्यालय में पढ़ने लायक नहीं है, अब इसको हमारे विद्यालय में मत भेजना । कृपया करके आप इसका दाखिला किसी दूसरे विद्यालय में करवा दीजिए या फिर आप इसके लिए कोई अन्य विवस्था कीजिए ।

अगर उस युवक की माँ उस दिन उससे सच बोल देती तो शायद वो युवक अपनी जिंदगी में कभी सफल हो ही नहीं पाता| माँ ने खत का अर्थ उल्टा बताकर बच्चे का पूरा जीवन ही बदल दिया ।

दोस्तों हमें भूलकर भी किसी व्यक्ति से नकारात्मक बाते नहीं बोलनी चाहिए, क्योंकि उस व्यक्ति पर हमारी नकारात्मक बातों का नकारात्मक प्रभाव ही पड़ेगा ।

सीख

- किसी व्यक्ति के प्रति बोले गए हमारे शब्द उसके जीवन पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। प्रेरणा और प्रोत्साहन के चंद शब्द इंसान का पूरा जीवन बदल सकते है, इसिलिए हमारे मुख से निकले शब्द हमेशा किसी की प्रेरणा और प्रोत्साहन के लिए ही होने चाहिए ना कि किसी का मनोबल गिराने के लिए।

कहानी 9

सच्ची अमीरी

एक शहर में एक गरीब लड़का अखबार और पत्रिकाएँ बेचा करता था। एक दिन उसने ध्यान दिया कि एक व्यक्ति रोज उसकी दुकान के पास खड़ा होकर पत्रिकाएँ पढ़ता है, लेकिन पैसे ना होने के कारण उन्हें खरीद नहीं पाता।

लड़के ने उससे कहा, "आप इन्हें ले जाइए, पढ़ने के बाद मुझे वापस दे देना।"

उस व्यक्ति ने कहा, "लेकिन मेरे पास तुम्हें देने के लिए पैसे नहीं हैं।"

लड़का मुस्कुराया और बोला, "कोई बात नहीं, जब आपके पास पैसे हो आप तब दे देना।"

वह लड़का उस व्यक्ति को अक्सर पत्रिकाएँ और पुस्तके पढ़ने को देने लगा|

कई साल बीत गए। वह व्यक्ति अपनी मेहनत से बहुत कामयाब और अमीर बन गया। एक दिन उसे वह लड़का अचानक से कहीं मिल गया। उस व्यक्ति ने कहा, "तुमने उस समय मेरी मदद की थी जब मैं अपने जीवन में संघर्ष कर रहा था"| आज मैं एक कामयाब और अमीर इंसान बन चुका हुँ| मैं तुम्हारे किए गए एहसान का कर्ज चुकाना चाहता हूँ । बताओं मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हुँ ।

लड़के ने मुस्कुराकर जवाब दिया, "साहब, जब मैंने आपकी मदद की थी, तब मैं बहुत गरीब था| लेकिन आज जब आप मेरे किए गए एहसान का कर्ज उतारने की बात कर रहे है, तो आज आप एक बहुत अमीर व्यक्ति बन चुके है| तो आप मेरी की हुई मदद की बराबरी कैसे कर सकते है ।

उस व्यक्ति के पास उस लड़के की इस बात का कोई जवाब नहीं था|

दोस्तों वो लड़का मेरी नजरों में दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति था क्योंकि उस लड़के ने उस व्यक्ति की मदद करने के लिए अमीर होने का इंतजार नहीं किया था ।

सीख

- किसी की मदद करने के लिए कभी भी सही समय का इंतजार ना करे| जब भी हो सके, तब ही मदद कर दे ।

कहानी 10

सच्ची महानता सादगी में है

एक बार सड़क पर एक बड़ी गाड़ी ने एक स्कूटर सवार को टक्कर मार दी। गाड़ी में से एक लड़का बहुत ही गुस्से में बाहर निकला। उसकी गाड़ी बड़ी थी, तो इसलिए उसका ताव भी बड़ा था। उसने गुस्से में स्कूटर सवार से कहा, "तुम्हें मालूम नहीं, मैं एक पुलिस अफसर का बेटा हूँ।"

स्कूटर सवार हेलमेट उतारते हुए बोला, "बेटा, मैं यहाँ का डी.एस.पी. हूँ। गाड़ी थोड़ा ध्यान से चलाया करो।"

इतना सुनकर उस युवक का सारा गुस्सा पलभर में शांत हो गया। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने तुरंत माफी माँग ली।

वो व्यक्ति वहाँ का डी.एस.पी. होने के बाद भी बड़ी ही सादगी से उस लड़के के साथ पेश आया। अगर वो आदमी चाहता, तो उस लड़के की अकड़ कुछ ही मिनटों में निकाल सकता था, लेकिन उसने ऐसा बिल्कुल भी नहीं किया। शायद अपनी इस सादगी की वजह से ही वो आदमी इतने ऊँचे पद तक पहुँच पाया था।

सीख

- कामयाब होने के बाद भी अगर आपके पैर ज़मीन पर ही रहते हैं, तो दुनिया की कोई भी ताकत आपको नीचे नहीं गिरा सकती।

कहानी 11

हालात नहीं, फैसले महत्वपूर्ण हैं

एक शराबी था। वह दिन-रात नशे में डूबा रहता था। उसकी इस आदत की वजह से कोई भी उसके परिवार की मदद नहीं करता था। उसके परिवार ने उसकी इस गंदी आदत की वजह से पूरी ज़िंदगी खूब परेशानियाँ झेलीं। उसके दो लड़के थे। उन दोनों ने बचपन से ही अपने पिता को शराब पीते हुए देखा था। बड़ी मुश्किलों और संघर्ष के बाद जब दोनों बच्चे बड़े हुए, तो एक अपने बाप की ही तरह शराबी बन गया और दूसरा पढ़-लिखकर एक बड़ा अफसर बन गया।

एक दिन उनके एक पड़ोसी ने उस शराबी लड़के से पूछा, "भाई, आप शराबी क्यों बन गए?" तो उसने बताया, "भाई, मेरे पिताजी बहुत बड़े शराबी थे। मैंने बचपन से उन्हें ही देखा था। उनको देख-देखकर मैं भी शराब पीने लगा और शराबी बन गया।"

उस पड़ोसी ने फिर उस दूसरे लड़के से पूछा, "भाई, आप शराबी क्यों नहीं बने?" तो उसने बताया, "भाई, मैंने भी बचपन से अपने पिताजी को ही देखा था। मैंने देखा कि वो दिन-रात नशे में ही रहते थे। उनकी इस आदत की वजह से हमें काफी ज़्यादा तकलीफें झेलनी पड़ीं। मैंने ये भी देखा कि उनकी इस बुरी आदत की वजह से हमारे परिवार को कितना ज़्यादा संघर्ष करना पड़ा। बस, मैं इसलिए शराबी नहीं बना।"

सीख

- हमारे हालात नहीं, बल्कि हमारे फैसले हमारा भविष्य तय करते हैं।

- एक जैसे हालात दो लोगों को अलग-अलग रास्तों पर ले जा सकते हैं। हमें यह तय करना होता है कि हम अपने बुरे अनुभवों से सीखेंगे या उन्हीं गलतियों को दोहराएँगे।
- जीवन में चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, सही निर्णय लेकर हम अपनी दिशा और अपना भविष्य बदल सकते हैं।

कहानी 12

मंज़िल पर नज़र

एक शहर में नकुल नाम का एक युवक रहता था, जिसे चित्रकारी का बहुत शौक था। वह खाली समय में चित्र बनाया करता था। उसका सपना था कि एक दिन उसकी बनाई हुई तस्वीरें बड़ी-बड़ी प्रदर्शनियों में लगें।

जब कुछ लोगों ने उसकी तस्वीरें देखीं, तो वे उसका मज़ाक उड़ाने लगे। कोई कहता, "तुम्हारी चित्रकारी में ऐसा क्या खास है?" तो कोई कहता, "इससे तुम्हारा भविष्य नहीं बन सकता। कोई दूसरा काम करो।"

शुरुआत में नकुल को उनकी बातें बुरी लगती थीं। उसने कई बार चित्र बनाना छोड़ने के बारे में भी सोचा। लेकिन उसके मन में अपने सपने को पूरा करने की इच्छा बहुत मजबूत थी।

उसने तय किया कि वह लोगों की नकारात्मक बातें सुनने के बजाय अपना पूरा ध्यान चित्रकारी पर लगाएगा। उसने यह भी तय किया कि वह उन लोगों से सीखेगा, जो चित्रकारी के क्षेत्र में आगे बढ़ चुके हैं।

वह रोज़ अभ्यास करने लगा। अपनी गलतियों को पहचानकर उन्हें सुधारता और हर दिन कुछ नया सीखता। धीरे-धीरे उसकी चित्रकारी पहले से बेहतर होती गई।

कुछ समय बाद शहर में एक बड़ी कला प्रदर्शनी आयोजित हुई। नकुल ने भी अपनी एक तस्वीर वहाँ भेजी। उसकी तस्वीर को लोगों ने बहुत पसंद किया और उसे प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला।

पुरस्कार लेते समय उसे लोगों की पुरानी बातें याद आईं। वह मुस्कुराया और मन ही मन सोचने लगा,

"अगर मैंने लोगों की नकारात्मक बातों पर ध्यान देकर चित्रकारी छोड़ दी होती, तो शायद मैं आज एक अच्छा चित्रकार नहीं बन पाता।"

उस दिन उसे समझ आया कि हमें लोगों की नकारात्मक बातों पर ध्यान देने के बजाय अपने लक्ष्य पर ध्यान देना चाहिए।

सीख

- हमें लोगों की नकारात्मक बातों पर ध्यान देने के बजाय अपने लक्ष्य पर ध्यान देना चाहिएँ।
- हर किसी की बात को सच मानकर अपनी मंज़िल से मत भटकिए। अपनी क्षमता पर विश्वास रखिए और लगातार मेहनत करते रहिए।

कहानी 13

अवसर देखने की दृष्टि

पवन एक युवा इंजीनियर था, जो कि अपने घर से दूर किसी दूसरे शहर में नौकरी करता था। एक बार दिवाली पर उसे और उसके दोस्तों को अपने घर जाकर अपने परिवार के साथ त्योहार मनाना था। उसने और उसके दोस्तों ने बस का टिकट खरीदने की बहुत कोशिश की, लेकिन उन्हें कहीं भी टिकट नहीं मिले।

इस परेशानी ने उसे सोचने पर मजबूर कर दिया।

पवन ने सोचा -

अगर हमें दिवाली पर घर जाने के लिए टिकट नहीं मिल पा रहे है, तो न जाने कितने लोग ऐसी ही परेशानी का सामना करते होंगे।

उसे एक विचार आया। क्यों न ऐसी ऑनलाइन सेवा शुरू की जाए, जहाँ लोग घर बैठे अपने मोबाइल से अपनी सुविधा और बजट के अनुसार अलग-अलग बसों में खाली सीटों की जानकारी देख सकें और अपने समय के हिसाब से आसानी से टिकट बुक कर सकें?

पवन ने अपने दोस्तों के साथ इस विचार को साझा किया। लेकिन उसके सभी दोस्तों ने उसके विचार को बेकार बताया और उन्होंने पवन को यह काम न करने की सलाह दी।

लेकिन पवन ने लोगों की समस्या को समझा और एक ऑनलाइन वेबसाइट बना डाली। इसके बाद उसने धीरे-धीरे बस संचालकों को अपनी सेवा से जोड़ना शुरू कर दिया।

कुछ समय बाद लोगों को एक ही जगह पर अलग-अलग बसों की जानकारी और टिकट बुक करने की सुविधा मिलने लगी। लोग अपनी सुविधा के अनुसार बस का किराया और समय देखकर ऑनलाइन

टिकट बुक करने लगे। पवन का छोटा-सा विचार धीरे-धीरे एक सफल व्यवसाय में बदल गया।

इसके बाद पवन केवल बस टिकट तक ही सीमित नहीं रहा। उसने अपनी वेबसाइट पर ऑनलाइन होटल, ट्रेन और यहाँ तक कि हवाई जहाज के टिकट बुक करने की सुविधा भी उपलब्ध करा दी।

लेकिन पवन यहीं नहीं रुका। वह आज भी ऐसी समस्याएँ खोज रहा है, जिनका सामना लोग अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी में करते हैं। वह उन समस्याओं को समझकर उनका समाधान अपनी ऑनलाइन वेबसाइट के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने की कोशिश करता रहता है।

पवन कहता है, "मुझे अवसर कहीं बाहर से नहीं मिला। वह तो एक समस्या के रूप में मेरे सामने ही खड़ा था। मैंने बस उसे पहचानने की कोशिश की।"

दोस्तों, अवसर और बाधा दोनों पवन और उसके दोस्तों के सामने आए थे, लेकिन पवन के दोस्तों ने बाधा पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि पवन ने अवसर पर ध्यान केंद्रित किया।

सीख

- असफल लोग बाधाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि सफल लोग अवसरों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

कहानी 14

इच्छा शक्ति की ताकत

यह महान मुक्केबाज़ मोहम्मद अली से प्रेरित एक लोकप्रिय प्रेरक प्रसंग है।

मोहम्मद अली अब तक दुनिया के सबसे बेहतरीन मुक्केबाज़ों में से एक हैं। मोहम्मद अली तीन बार विश्व हेवीवेट चैंपियन का खिताब जीत चुके हैं।

कहा जाता है कि एक बार मोहम्मद अली से किसी ने पूछा कि इच्छा शक्ति (will power) ज्यादा जरूरी है या फिर प्रतिभा शक्ति (skill power)? मोहम्मद अली ने जवाब दिया कि इच्छा शक्ति । उस व्यक्ति ने मोहम्मद अली से फिर पूछा कि इच्छा शक्ति क्यों ज्यादा जरूरी है? सारी दुनिया तो प्रतिभा पर काम करती है।

इस पर मोहम्मद अली कहते हैं कि बॉक्सिंग मैच के दौरान जब मेरा प्रतिद्वंद्वी मुझे घूँसा मारकर नीचे गिरा देता है, तो उस वक्त मेरी प्रतिभा तो मुझे नीचे गिरवा देती है, लेकिन मेरी इच्छा शक्ति कहती है कि मोहम्मद, खड़ा हो जा, एक बार और मोहम्मद.... एक बार और।

मेरी इच्छा शक्ति ही है, जो हर बार मुझे गिरने के बाद उठाती है और एक बार फिर से लड़ने को कहती है। वो आगे कहते हैं कि जब तक किसी इंसान के अंदर इच्छा शक्ति नहीं होगी, तब तक प्रतिभा शक्ति कुछ भी नहीं कर सकती।

दोस्तों, जितने भी लोग आज अपने-अपने क्षेत्रों में बुलंदियों पर हैं, क्या वे सिर्फ अपनी प्रतिभा की वजह से वहाँ पहुँच पाए हैं?

जवाब है - नहीं।

वे सभी लोग सिर्फ अपनी प्रतिभा की वजह से नहीं, बल्कि अपनी मजबूत इच्छा शक्ति की वजह से वहाँ पहुँच पाए हैं।

मैं ये नहीं कह रहा हूँ कि प्रतिभा जरूरी नहीं है। प्रतिभा भी जरूरी है, लेकिन इच्छा शक्ति ज्यादा जरूरी है। क्योंकि जब मुश्किल समय आएगा, तो आपको आपकी प्रतिभा से ज्यादा आपकी इच्छा शक्ति आगे बढ़ने में आपकी मदद करेगी।

अगर किसी इंसान के पास प्रतिभा थोड़ी कम है, मगर उसमें इच्छा शक्ति भरपूर है, तो उसके सफल होने की संभावनाएँ ज्यादा हैं किसी ऐसे व्यक्ति से, जिसके पास प्रतिभा तो ज्यादा है, पर उसकी इच्छा शक्ति बहुत कमजोर है।

सीख

- प्रतिभा शक्ति से इच्छा शक्ति ज्यादा जरूरी है।
- प्रतिभा आपको शुरुआत करने की क्षमता देती है, लेकिन इच्छा शक्ति आपको अंत तक टिके रहने की ताकत देती है। इसलिए सफलता के लिए प्रतिभा के साथ मजबूत इच्छा शक्ति भी जरूरी है।

कहानी 15

सही समय पर सही रणनीति

एक बार एक बहुत ही छोटे से राज्य के राजा को एक गुप्त सूचना मिली कि उनका एक पड़ोसी राज्य, जो कि बहुत ही शक्तिशाली है, वह तीन-चार दिन में उनके ऊपर हमला करने वाला है। राजा ने अपने सभी मंत्रियों एवं सलाहकारों को इकट्ठा किया और सबसे उनकी राय माँगी। उनमें से उनका सबसे चतुर मंत्री बोला, "सबसे पहले तो यह पता लगाया जाए कि यह खबर सच्ची है या झूठी।"

पता लगाया गया तो खबर एकदम सच्ची निकली। फिर वह मंत्री बोला, "राजा जी, हमला तो वैसे भी होने ही वाला है। क्यों न एक काम किया जाए? वो तीन-चार दिन बाद हमारे राज्य पर हमला करने वाले हैं, क्यों न हम आज ही रात को उनके ऊपर हमला कर दें? हम अपनी पूरी तैयारी और पूरी ताकत के साथ आज रात को ही हमला कर देते हैं। दुश्मन सेना तैयार नहीं होगी और हो सकता है कि अचानक हुए हमले से वो घबरा जाएँ। अगर हम तीन-चार दिन का इंतजार करेंगे, तो वो पूरी तरह से तैयार हो जाएँगे।"

सभी मंत्रियों एवं सलाहकारों में एक राय बन गई और उसी रात को ही इस छोटी-सी सेना ने एक बहुत बड़ी सेना पर हमला कर दिया।

बड़ी सेना इस हमले के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थी। अचानक हुए इस हमले से बड़ी सेना घबरा गई। उन्हें संभलने का मौका ही नहीं मिला और उनके सैनिक भाग खड़े हुए, और उनको हार का सामना करना पड़ा।

सीख

- एक अच्छी रणनीति से आप बड़े लक्ष्यों को भी हासिल कर सकते हैं।

कहानी 16

मेहनत और किस्मत

दो दोस्त थे। दोनों ने अपनी स्कूली शिक्षा साथ ही पूरी की। स्कूल के बाद दोनों अलग-अलग कॉलेज में पढ़ने लगे। धीरे-धीरे समय बीतता गया। दोनों अपने-अपने जीवन में आगे बढ़ने लगे। दोनों की शादियाँ भी हो गईं और दोनों के बच्चे भी हो गए।

उनमें से एक अमीर बन गया और दूसरा गरीब ही रह गया। दस-पंद्रह साल बाद दोनों अचानक कहीं टकरा गए। दोनों में बातचीत शुरू हुई।

गरीब दोस्त ने पूछा, "भाई, तू इतना अमीर और सफल कैसे बन गया?"

अमीर दोस्त ने बताया, "कॉलेज से निकलने के बाद भी मैंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। मैंने अपने ऑफिस में प्रमोशन के लिए बहुत सारे पेपर दिए। बहुत सारी सरकारी नौकरियों की भी तैयारी की। बहुत सारी बड़ी-बड़ी कंपनियों में इंटरव्यू दिए। बहुत ज्यादा मेहनत करने के बाद मुझे एक अच्छी एम.एन.सी. (M.N.C.) कंपनी में अच्छी नौकरी मिल गई। उसके बाद मैंने वहाँ पर मेहनत करके और भी प्रमोशन लिए। और आज मैं अपनी कड़ी मेहनत और लगन की वजह से अमीर और सफल बन गया हूँ।"

फिर अमीर दोस्त ने पूछा, "भाई, तू कैसे गरीब रह गया?"

तो गरीब दोस्त ने बताया, "भाई, हो सकता है कि मेरी किस्मत में यही लिखा हो और शायद भगवान की भी यही मर्जी रही होगी।"

सीख

- सफल लोग हमेशा अपनी मेहनत और अपने संघर्ष के बारे में बातें करते हैं, जबकि असफल लोग अक्सर किस्मत को दोष

देते हैं कि "मेरी तो किस्मत ही खराब थी" या "शायद मेरी किस्मत में तो यही लिखा था।"

कहानी 17

हार नहीं मानी

कारगिल युद्ध के दौरान भारतीय सेना के अधिकारी मेजर देवेंद्र पाल सिंह दुश्मन से बहादुरी से मुकाबला कर रहे थे। उसी दौरान उनके पास एक मोर्टार का गोला फटा, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए।

उन्हें तुरंत सेना के अस्पताल पहुँचाया गया। उनकी स्थिति इतनी गंभीर थी कि एक समय डॉक्टरों ने उन्हें मृत समझ लिया था। लेकिन बाद में पता चला कि उनकी साँसें अभी भी चल रही थीं और तुरंत उनका दोबारा उपचार शुरू किया गया।

उनकी जान बचाने के लिए डॉक्टरों को उनका एक पैर भी काटना पड़ा। डॉक्टरों को लग रहा था कि मेजर अब कभी चल नहीं पाएँगे। लेकिन मेजर ने ठान लिया था कि वे न सिर्फ चलेंगे, बल्कि दौड़ेंगे भी।

सिर्फ अपनी जिंदगी बचाना ही मेजर का मकसद नहीं था। उनका मकसद उन लोगों को प्रेरणा देना था, जो अपनी जिंदगी में कुछ बुरा हो जाने पर निराश हो जाते हैं और खुद को कमजोर और लाचार समझ बैठते हैं।

लंबे समय तक मेजर का अस्पताल में इलाज चला। इसी दौरान उन्हें एक कृत्रिम पैर लगाया गया। शुरुआत में कृत्रिम पैर से चलने में उन्हें बहुत परेशानी हुई और काफी दर्द भी सहना पड़ा। वे बार-बार गिरे, लेकिन हर बार फिर से खड़े हुए और धीरे-धीरे उन्होंने दौड़ना शुरू कर दिया।

उन्होंने अपनी दिव्यांगता को कभी अपनी कमजोरी नहीं समझा। अपनी इच्छाशक्ति और कड़ी मेहनत से मेजर ने असंभव को संभव कर दिखाया।

आज देवेंद्र पाल सिंह जी को दुनिया "ब्लेड रनर" के नाम से जानती है। वे कई मैराथन दौड़ों में भाग ले चुके हैं और अपनी कहानी से लाखों लोगों को प्रेरित कर रहे हैं।

सीख

- अगर रास्ता खराब हो, तो हम अच्छे जूते पहनकर उस रास्ते पर आराम से चल सकते हैं। लेकिन अगर हमारे जूतों के अंदर ही कंकड़ भरे हों, तो अच्छे रास्ते पर चलना भी मुश्किल हो जाता है। इसी तरह इंसान अक्सर बाहर की चुनौतियों से नहीं, बल्कि अपने अंदर की कमजोरियों की वजह से हारता है। यदि आप अंदर से मजबूत हैं, तो दुनिया की कोई भी ताकत आपको हरा नहीं सकती।

कहानी 18

हार मत मानो

यह कहानी 1938 की है। हंगरी सेना का एक जवान जिसका नाम था कैरोली तकाच। कैरोली को पिस्टल शूटिंग में महारत हासिल थी। उसका सपना था कि वो अपने देश के लिए ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीते। अपने इस सपने को पूरा करने के लिए वो दिन-रात कड़ी मेहनत करता और घंटों तक अभ्यास करता रहता।

उसकी कड़ी मेहनत का ही परिणाम था कि वो हंगरी का सर्वश्रेष्ठ पिस्टल शूटर बन चुका था। उसके शानदार प्रदर्शन को देखते हुए हंगरीवासियों को पूरा यकीन हो गया था कि कैरोली अपने देश के लिए गोल्ड मेडल जरूर जीतेगा।

मगर होनी को शायद कुछ और ही मंजूर था। आर्मी के एक ट्रेनिंग कैंप के दौरान कैरोली के साथ एक बहुत बड़ा हादसा हो गया। जिस हाथ से वो गोल्ड मेडल जीतना चाहता था, उसी हाथ में एक हैंड ग्रेनेड फट गया और कैरोली का वो हाथ उसके शरीर से हमेशा-हमेशा के लिए अलग हो गया।

इस घटना के बारे में सुनकर पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई। सभी की उम्मीदों पर पानी फिर चुका था। लोगों ने सोचा कि अब कैरोली का सपना सिर्फ सपना ही रह जाएगा। मगर कैरोली हार मानने वालों में से नहीं था। वो तो किसी और ही मिट्टी का बना हुआ था। कैरोली ने सोचा कि मेरा एक हाथ नहीं रहा तो क्या हुआ, मेरे पास भगवान का दिया हुआ एक और हाथ है और अब मैं इसी हाथ से अपने और अपने देशवासियों के सपने को पूरा करूँगा।

कैरोली ने फैसला किया कि अब वो उस पर ध्यान नहीं देगा, जो उसके पास नहीं है, बल्कि अब वो उस पर ध्यान देगा, जो अभी भी उसके पास

बचा हुआ है। काफी दिनों तक कैरोली का अस्पताल में इलाज चला और इलाज के ठीक बाद ही उसने अपने दूसरे हाथ की ट्रेनिंग शुरू कर दी।

शुरुआत में अभ्यास के समय उसे बहुत दर्द हुआ। उसे बहुत तकलीफों का सामना करना पड़ा। मगर फिर भी कैरोली ने हार नहीं मानी और आगे बढ़ता रहा। वो अपने एक ही हाथ से दिन-रात अभ्यास करता रहा।

लगातार कई महीनों तक अभ्यास करने के बाद, वो हंगरी की राष्ट्रीय शूटिंग प्रतियोगिता में पहुँचा। सभी खिलाड़ियों ने उसे देखकर सोचा कि वो इतना सब कुछ होने के बाद भी उनका हौसला बढ़ाने आया है। लेकिन कैरोली मुस्कुराया और बोला, *"मैं यहाँ तुम्हारा हौसला बढ़ाने नहीं, बल्कि तुमसे मुकाबला करने आया हूँ।"*

किसी को भी यह मालूम नहीं था कि वो पिछले कई महीनों से अपने दूसरे हाथ से ट्रेनिंग कर रहा था। प्रतियोगिता शुरू हुई। सभी खिलाड़ी अपने सर्वश्रेष्ठ हाथ से निशाना लगा रहे थे, जबकि कैरोली अपने एकमात्र हाथ से निशाना लगा रहा था।

परिणाम आया... मगर अंत में जीता कौन? *कैरोली!* कैरोली जीत गया। यह मुकाम कैरोली ने कड़ी मेहनत और अपने जुनून से हासिल किया था। और इसी जीत के साथ हंगरीवासियों के बीच एक बार फिर से खुशी की लहर दौड़ गई। मगर वो यहाँ रुका नहीं, उसका सपना तो अपने देश के लिए ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतना था।

इसलिए उसने अपना सारा ध्यान 1940 के ओलंपिक खेलों पर लगा दिया और अपनी ट्रेनिंग करता रहा। मगर विश्व युद्ध की वजह से 1940 के ओलंपिक खेल रद्द हो गए। मगर फिर भी कैरोली निराश नहीं हुआ। अब उसने अपना सारा ध्यान 1944 में होने वाले ओलंपिक खेलों पर लगा दिया और अपनी ट्रेनिंग करता रहा। मगर बदकिस्मती की वजह से 1944 के ओलंपिक खेल भी विश्व युद्ध की वजह से रद्द हो गए। भगवान भी शायद कैरोली की परीक्षा ही ले रहे थे।

कैरोली ने अब अपना सारा ध्यान 1948 में होने वाले ओलंपिक खेलों पर लगा दिया और अपनी ट्रेनिंग जारी रखी।

अब 1948 के ओलंपिक खेल भी आ गए, लेकिन अब कैरोली की उम्र 38 साल हो चुकी थी और अब उसका मुकाबला अपने से कई युवा खिलाड़ियों के साथ था। युवा खिलाड़ियों के साथ मुकाबला करना और भी ज्यादा मुश्किल होता है। मुकाबला शुरू हुआ... मगर अंत में जीता कौन? कैरोली! कैरोली जीत गया।

1948 में अपने से कई जवान और जोशीले खिलाड़ियों को हराकर उसने अपने और अपने देशवासियों के सपने को पूरा किया और हंगरी को गोल्ड मेडल जिताया।

मगर वो यहाँ भी नहीं रुका। अब उसने अपना सारा ध्यान 1952 में होने वाले ओलंपिक खेलों पर लगा दिया और 1952 में एक बार फिर अपने देश को गोल्ड मेडल जिताकर कैरोली ने इतिहास रच दिया।

कैरोली तकाच की कहानी हमें सिखाती है कि जीवन में सफलता केवल प्रतिभा से नहीं, बल्कि अटूट विश्वास, निरंतर अभ्यास और कभी हार न मानने वाले संकल्प से मिलती है।

सीख

- उसपर ध्यान दो जो तुम्हारे पास अभी भी बचा हुआ है, उसपर नहीं जिसे तुम खो चुके हो।

कहानी 19

सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों पर ध्यान दें

एक बार एक बहुत ही अमीर और कामयाब आदमी अपने कार चालक के साथ कहीं जा रहा था। उसने ध्यान दिया कि आज उसका कार चालक कुछ परेशान-सा लग रहा था। उस अमीर आदमी ने अपने कार चालक से पूछा, "आज तुम कुछ परेशान-से लग रहे हो। क्या बात है? सब ठीक तो है?"

तो उसके कार चालक ने बोला, "नहीं सर, कोई खास बात नहीं है।"

इस पर वह आदमी बोला, "जो भी बात है, तुम मुझे बताओ। शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर पाऊँ।"

उसको तब थोड़ा अच्छा महसूस हुआ, तो उसने बताया, "सर, मैंने आज से 5-10 साल पहले अपने लिए जो लक्ष्य तय किए थे, उन सभी को पूरा कर पाना तो दूर, मैं आज उन लक्ष्यों के आस-पास भी नहीं हूँ। मैं आज उन सभी लक्ष्यों से बहुत दूर हूँ।"

उस आदमी ने उसकी परेशानी समझी और एक कागज और एक पेन देते हुए कहा, "आज से 5-10 साल पहले तुमने जो भी लक्ष्य तय किए थे, वो इस पेपर पर लिखो।"

कार चालक बोला, "सर, ऐसे कैसे लिखूँ? अभी तो मुझे वो सब याद नहीं है।"

इस पर वो अमीर आदमी बोला, "अगर वो तुम्हें याद ही नहीं है, तो वो तुम्हारे लक्ष्य कैसे हो सकते हैं? लक्ष्य तो वो होते हैं, जो हमेशा याद रहें कि हमें इन्हें पूरा करना है।"

वो आदमी बोला, "कोई बात नहीं। तुम आराम से याद करके अपने सभी लक्ष्य इस कागज पर लिखना और कुछ समय बाद मुझे दिखाना।"

कुछ समय बाद उसका कार चालक उस कागज पर पूरे 25 लक्ष्य लिखकर उस अमीर आदमी के पास आया। उस अमीर आदमी ने उन 25 लक्ष्यों को देखकर कहा, "इन 25 लक्ष्यों में से तुम ऐसे 5 लक्ष्य चुन लो, जिन्हें तुम हर हाल में पूरा करना चाहते हो। चाहे जमीन-आसमान एक ही क्यों न हो जाए, मगर तुम उन 5 लक्ष्यों को हासिल करके ही मानोगे। इनमें से ऐसे 5 लक्ष्य चुन लो, जो तुम्हारे जीवन के सबसे बड़े लक्ष्य हैं।"

कुछ समय बाद कार चालक उस अमीर आदमी के पास आया और उसे अपने 5 ऐसे लक्ष्य बताए, जो उसके जीवन के सबसे बड़े लक्ष्य थे और जिन्हें वो हर हाल में पूरा करना चाहता था।

उन 5 लक्ष्यों को देखकर वह अमीर आदमी बोला, "ये जो 5 लक्ष्य हैं, ये तुम्हारे जीवन के मुख्य लक्ष्य हैं। तुम सचमुच इनके बारे में गंभीर हो। और जो बाकी के 20 लक्ष्य हैं, ये ऐसे लक्ष्य हैं, जो तुम्हें तुम्हारे इन 5 मुख्य लक्ष्यों को पाने से रोक रहे थे।"

"अब बेहतर यही होगा कि तुम उन 20 लक्ष्यों को भूलकर अपना सारा ध्यान सिर्फ और सिर्फ अपने 5 मुख्य लक्ष्यों को हासिल करने में लगा दो। अब तुम एक-एक करके सिर्फ अपने इन 5 लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश करो। और जब तुम अपने इन 5 सबसे बड़े लक्ष्यों को हासिल कर लोगे, तो तुम देखोगे कि बाकी के 20 लक्ष्य अपने आप ही पूरे हो चुके होंगे।"

उस अमीर आदमी ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, "मान लो तुम घर से दफ्तर के लिए निकले हो। मगर तुम्हारे दिमाग में और भी कुछ चीजें चल रही हैं, जैसे कि... मुझे बैंक भी जाना है, मुझे एयरपोर्ट भी जाना है, मुझे बाजार भी जाना है... इत्यादि। तो तुम तो कभी दफ्तर पहुँच ही नहीं पाओगे।"

"तुम्हें सबसे पहले वहाँ पहुँचना चाहिए, जहाँ पहुँचना तुम्हारे लिए सबसे ज्यादा जरूरी है। इसलिए तुम्हें फालतू चीजों को छोड़कर सिर्फ और सिर्फ अपने मुख्य लक्ष्यों पर ध्यान देना चाहिए।"

उस कार चालक को अपने मालिक की बात अच्छे से समझ में आ गई और उसने अपना सारा ध्यान अपने 5 मुख्य लक्ष्यों को पूरा करने में लगा दिया।

सीख

- अगर आप अपने जीवन के सबसे बड़े सपनों को पूरा कर लेते हैं, तो छोटे-मोटे सपने तो अपने आप ही पूरे हो जाते हैं। इसलिए आप अपने जीवन के सबसे बड़े सपनों पर ध्यान लगाएँ और उन्हें पूरा करें।
- आप भी अपने लक्ष्यों की लिस्ट बनाकर उनमें से अपने जीवन के सबसे बड़े लक्ष्यों को ढूँढकर अपना सारा ध्यान उन्हें पूरा करने में लगाएँ।

कहानी 20

सफल होने का मजबूत इरादा रखिए

शिव खेड़ा जी, जो कि एक लेखक और मोटिवेशनल स्पीकर हैं, उन्होंने अपनी किताबों के जरिए लाखों लोगों को जीवन में सफल होने के लिए प्रेरित किया है। वे बताते हैं कि जब-जब मैं प्रोग्राम करता हूँ, तो कई लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं, "सर, मैं जीवन में सफल होना चाहता हूँ। मैं बहुत सारी किताबें पढ़ता हूँ, बहुत सारे सफल लोगों से मिलता हूँ और बहुत सारे सेमिनारों में भी जाता हूँ। मेरी बहुत इच्छा है सफल होने की, मगर मैं फिर भी सफल नहीं हो पा रहा हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि समस्या कहाँ है। मैं क्यों सफल नहीं हो पा रहा हूँ?"

तो मैं उनसे कहता हूँ कि आपकी सफल होने की इच्छा है... बस यही समस्या है। आपका सफल होने का इरादा नहीं है। आप जिस दिन जीवन में सफल होने का इरादा कर लोगे, उस दिन जीवन में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते चले जाओगे।

वे आगे कहते है की, ज़िंदगी में इच्छा और इरादे में बहुत फर्क होता है, क्योंकि इच्छा का सौदा हो सकता है, मगर ज़िंदगी में इरादे का सौदा नहीं हो सकता। और एक बात ये भी है कि ज़िंदगी में जब भी दबाव पड़ता है, तो इच्छा हमेशा कमजोर पड़ जाती है लेकिन दबाव पड़ने पर इरादा और भी ज्यादा मजबूत हो जाता है।

इसीलिए, अगर आप जीवन में सचमुच सफल होना चाहते हो, तो सफल होने की इच्छा मत रखिए, बल्कि सफल होने का पक्का इरादा रखिए।

सीख

- अगर आप जीवन में सचमुच सफल होना चाहते हैं, तो सफल होने की इच्छा नहीं, बल्कि सफल होने का मजबूत इरादा रखिए।

कहानी 21

एक ही दुख, बार-बार क्यों?

एक बार एक व्यक्ति कुछ ऐसे लोगों को संबोधित कर रहा था, जिनके जीवन में कुछ न कुछ बुरी घटनाएँ घट चुकी थीं। जिसकी वजह से वे सभी लोग काफी लंबे समय से दुखी चल रहे थे। उस व्यक्ति ने उन सभी लोगों को हँसाने के लिए एक मजेदार चुटकुला सुनाया। उस मजेदार चुटकुले को सुनकर वे सभी लोग अपने दुख को भूलकर खूब हँसे। उन सभी लोगों ने खूब ठहाके लगाए। उन सभी लोगों को हँसता हुआ देखकर उस व्यक्ति को बहुत अच्छा लगा, इसलिए उसने उन सभी को फिर से हँसाने के लिए दोबारा वही चुटकुला सुना दिया।

लेकिन इस बार सिर्फ आधे लोग ही हँसे और आधे लोग नहीं हँसे। उस व्यक्ति ने वही चुटकुला तीसरी बार फिर सुनाया, लेकिन इस बार कोई भी नहीं हँसा। लेकिन उस व्यक्ति ने चौथी बार फिर से सभी को वही चुटकुला सुना दिया। इस बार भीड़ में से एक आदमी उठकर बोला, "भाई, आप हमें एक ही चुटकुले को बार-बार सुनाकर हँसाने की कोशिश क्यों कर रहे हो? अब हमें हँसी नहीं आ रही है। भला एक ही चुटकुले पर कोई बार-बार कैसे हँस सकता है?"

इस बात पर उस व्यक्ति ने कहा, "मैं भी आप सभी लोगों को यही समझाना चाहता हूँ कि अगर आप एक ही खुशी को लेकर बार-बार खुश नहीं हो सकते, तो फिर एक ही दुख को लेकर आप बार-बार दुखी क्यों होते हो? एक ही गम को लेकर बार-बार क्यों रोते हो?"

दोस्तों, उस व्यक्ति की यह बात सुनने में तो साधारण-सी लगती है, मगर इसका अर्थ बहुत ही गहरा है। हम हमेशा अपने जीवन में घटी बुरी घटनाओं को याद करके बार-बार रोते रहते हैं।

सीख

- अगर आप एक ही खुशी को लेकर बार-बार खुश नहीं हो सकते, तो फिर आपको एक ही दुख को लेकर बार-बार दुखी भी नहीं होना चाहिए।

कहानी 22

जब तक जीवन है तब तक संघर्ष है

डॉ. नॉर्मन विंसेंट पील, जिन्होंने *सकारात्मक सोच की शक्ति* नामक किताब लिखी है, उनसे जुड़ा एक प्रसिद्ध प्रेरक प्रसंग है।

एक बार वे अपने एक सेमिनार में आए और उन्होंने देखा कि सभी लोग बड़े आराम से बैठे थे। डॉ. नॉर्मन ने कहा, "आप सभी लोग बड़े आराम से बैठे हो, लगता है आप में से किसी को भी कोई समस्या नहीं है।" फिर उन्होंने पूछा, "आपमें से कितने लोग ऐसे हैं, जिनको कोई न कोई समस्या है?" इतना सुनकर वहाँ बैठे लगभग सभी लोगों ने हाथ खड़े कर लिए।

लगभग सभी लोगों के हाथ खड़े देखकर डॉ. साहब बोले, "आपमें से कितने लोग ऐसे हैं, जो समस्याओं से छुटकारा पाना चाहते हैं?" उनकी यह बात सुनकर सभी लोगों ने फिर से हाथ खड़े कर लिए।

फिर डॉ. नॉर्मन बोले, "जब मैं यहाँ आ रहा था, तो रास्ते में मैंने कुछ लोगों को देखा। उनमें से किसी को भी कोई समस्या नहीं थी। कितने लोग जानना चाहते हैं कि वह कौन-सी जगह है?" एक बार फिर सभी लोगों ने हाथ खड़े कर लिए।

फिर डॉ. नॉर्मन विंसेंट पील बोले, "जब मैं यहाँ आ रहा था, तो मैंने रास्ते में एक कब्रिस्तान देखा। वहाँ सभी लोग बड़े आराम से लेटे हुए थे। उनको कोई समस्या ही नहीं थी| अब आप लोग बताइए कि आपमें से कितने लोग समस्या से छुटकारा पाना चाहते हैं?"

इस बार सभी ने अपने हाथ अपनी जेबों में डाल लिए।

तब डॉ. नॉर्मन बोले, "समस्या जीवन का एक प्रतीक है। जब तक हम जीवित रहेंगे, तब तक समस्याएँ रहेंगी ही रहेंगी। अगर समस्याएँ ही नहीं

रहेंगी, तो हम भी नहीं रहेंगे। अगर जीवन में समस्याएँ कम होने लगें, तो समझ लेना कि जिंदगी खतरे में है और अगर समस्याएँ खत्म, तो जिंदगी खत्म।"

एक किस्सा और।

सदी के महानायक अमिताभ बच्चन जी को जब अपने करियर में लगातार असफलताओं का सामना करना पड़ रहा था, तब उन्होंने अपने पिताजी, श्री हरिवंश राय बच्चन जी से कहा कि, "बाबूजी, जीवन में बहुत संघर्ष हैं।" तो श्री हरिवंश राय बच्चन जी ने उनसे कहा, "नहीं बेटा, जीवन में बहुत संघर्ष नहीं है, बल्कि जब तक जीवन है, तब तक संघर्ष है।"

इसका मतलब है कि जब तक आप जीवित हैं, तब तक परेशानियाँ तो रहेंगी ही। अगर परेशानियाँ खत्म, तो जीवन खत्म। इसलिए परेशानियों से डरें नहीं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करें और आगे बढ़ें।

सीख

- जब तक जिंदगी रहेगी, तब तक समस्याएँ रहेंगी ही रहेंगी। इसलिए समस्याओं से डरें नहीं, बल्कि समस्याओं से लड़ें और जीवन में आगे बढ़ें।

कहानी 23

कंपटीशन कहाँ है?

जब हम लोग अपने स्कूली जीवन में थे, तो हमारे अध्यापक कई बार हमसे यह बात कहते थे कि जीवन में बहुत ही ज्यादा कंपटीशन है। ठीक से पढ़ाई करो। आजकल पढ़ाई-लिखाई करने के बाद भी अच्छी नौकरी नहीं मिलती है। और आज भी यही हाल है। ज्यादातर लोग यही बातें कहते हैं कि जिंदगी में कंपटीशन बहुत ज्यादा है। अगर अच्छी तरह पढ़ाई-लिखाई नहीं करोगे, तो तुम कंपटीशन में बहुत पीछे रह जाओगे।

दोस्तो, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि चाहे आप किसी भी क्षेत्र में काम करते हैं, आपका चाहे जो भी काम हो, आज बहुत ही कम कंपटीशन है। आज जीवन में सफल होना बहुत ही ज्यादा आसान है। किसी भी क्षेत्र में, भले ही वह खेल हो, नौकरी हो, व्यापार हो या कोई भी क्षेत्र हो, आज के समय में सफल होना बहुत ही ज्यादा आसान हो चुका है।

कंपटीशन कैसे नहीं है और आज के समय में सफल होना आसान क्यों हो चुका है?

आप यह सोचिए कि आप कितने ऐसे लोगों को जानते हैं, जिन्हें जितने पैसे मिलते हैं, वे लोग उससे दोगुना काम करते हैं। सोचिए... सोचिए... शायद ही कोई... या फिर एक-दो या तीन। इससे ज्यादा नहीं।

आज के समय में ज्यादातर लोग ऐसे हैं कि उन्हें जितने पैसे मिलते हैं, वे उतना काम भी नहीं करना चाहते हैं। और एक दूसरा वर्ग ऐसा भी है, जो सिर्फ उतना ही काम करता है, जिससे उनकी जान छूट जाए। और एक बहुत-बहुत छोटा-सा वर्ग ही ऐसा है कि उन्हें जितने पैसे मिलते हैं, वे उससे दोगुना काम करते हैं।

अब मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि अगर आप उस छोटे-से वर्ग में आते हैं, जो जितने पैसे मिलते हैं, उससे दोगुना काम करते हैं, तो फिर चाहे

आपका जो भी कार्य-क्षेत्र हो, आपका कंपटीशन है ही कहाँ? बताइए, कहाँ है कंपटीशन? नहीं है जी, आपका कोई भी कंपटीशन नहीं है।

- आज आप एक अच्छा डॉक्टर ढूँढ़िए, तो एक अच्छा डॉक्टर नहीं मिलता।
- आज आप एक अच्छा शिक्षक ढूँढ़िए, तो एक अच्छा शिक्षक नहीं मिलता।
- आज आप एक अच्छा वकील ढूँढ़िए, तो एक अच्छा वकील नहीं मिलता।

आज की तारीख में एक अच्छा कुछ भी नहीं मिलता आपको। कंपटीशन सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए है, जो काम नहीं करना चाहते हैं या फिर सिर्फ उतना ही काम करना चाहते हैं, जितने उन्हें पैसे मिलते हैं।

आप अपने कार्य-क्षेत्र में अपने प्रतियोगियों से दोगुना काम कीजिए। फिर आप देखेंगे कि कंपटीशन खत्म हो चुका है और आप कंपटीशन में बहुत आगे निकल चुके हैं।

सीख

- आप जितना पाना चाहते हैं, उससे दोगुनी मेहनत कीजिए। ऐसा करने से आपकी सफलता की संभावनाएँ बढ़ जाएँगी और आपका कंपटीशन खत्म हो जाएगा।

कहानी 24

हार मान लेने से हार होती है

अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का जीवन संघर्ष, असफलताओं और दृढ़ संकल्प की ऐसी कहानी है, जो हर उस व्यक्ति को प्रेरणा देती है, जो जीवन में बार-बार कठिनाइयों का सामना कर रहा है।

अब्राहम लिंकन का जन्म एक साधारण और आर्थिक रूप से कमजोर परिवार में हुआ था। बचपन से ही उन्हें कई अभावों का सामना करना पड़ा। कम उम्र में ही उनकी माता का निधन हो गया। परिस्थितियाँ कठिन थीं, लेकिन उन्होंने सीखना और आगे बढ़ना नहीं छोड़ा।

युवा अवस्था में भी उन्हें कई संघर्षों और असफलताओं से गुजरना पड़ा| उन्हें व्यापार में असफलता मिली, चुनावों में हार का सामना करना पड़ा और निजी जीवन में भी कई कठिन दौर आए। एक के बाद एक असफलताएँ उनके सामने आती रहीं। उनके पास हर बार यह विकल्प था कि वे अपने प्रयास छोड़ दें और परिस्थितियों के आगे झुक जाएँ, लेकिन उन्होंने हार मानने के बजाय हर असफलता से कुछ सीखना चुना।

वे गिरते रहे, संभलते रहे और फिर आगे बढ़ते रहे। वर्षों के संघर्ष, धैर्य और निरंतर प्रयास के बाद आखिरकार वे संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बने और इतिहास के महान नेताओं में गिने गए।

लिंकन का जीवन हमें यह सिखाता है कि *असफलता हमें तब तक नहीं हरा सकती, जब तक हम स्वयं हार मानने का निर्णय न लें।* रास्ते में आने वाली मुश्किलें हमारी परीक्षा लेती हैं, लेकिन यही मुश्किलें हमें मजबूत भी बनाती हैं।

अक्सर हम छोटी-सी असफलता के बाद हार मान लेते हैं और यह सोच बैठते है कि हम सफल नहीं हो सकते। हम प्रयास करना छोड़ देते हैं और यहीं हमारी सबसे बड़ी हार होती है। क्योंकि हार किसी प्रयास के असफल होने से नहीं होती, **हार तब होती है जब हम दोबारा प्रयास करने से इनकार कर देते हैं।**

याद रखिए, गिरना कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात यह है कि गिरने के बाद हम कितनी मजबूती से खड़े होते हैं।

जो व्यक्ति असफलताओं के बावजूद प्रयास करता रहता है, उसको दुनिया की कोई भी ताकत नहीं हरा सकती।

सीख

- इंसान तब नहीं हारता जब वो बार-बार असफल होता है, बल्कि इंसान तब हारता है जब वो अंदर से हार मान लेता है और प्रयास करना छोड़ देता है।

कहानी 25

सफल और असफल में फर्क

एक बार एक सफल व्यक्ति से पूछा गया, "ऐसे कौन-से काम हैं, जो सफल लोग करते हैं, मगर असफल लोग नहीं करते?"

वह सफल व्यक्ति बोला, "ये वही काम होते हैं, जिन्हें सफल लोग भी नहीं करना चाहते, मगर वे फिर भी करते हैं।"

जैसे कि—

असफल लोग सुबह जल्दी उठना नहीं चाहते। सफल लोग भी सुबह जल्दी उठना नहीं चाहते, मगर वे फिर भी उठते हैं।

असफल लोग कड़ी मेहनत नहीं करना चाहते। सफल लोग भी कड़ी मेहनत नहीं करना चाहते, मगर वे फिर भी करते हैं।

असफल लोग घंटों तक काम नहीं करना चाहते। सफल लोग भी घंटों तक काम नहीं करना चाहते, मगर वे फिर भी करते हैं।

असफल लोग मुश्किल काम नहीं करना चाहते। सफल लोग भी मुश्किल काम नहीं करना चाहते, मगर वे फिर भी करते हैं।

सफल लोग उन कामों को करते हैं, जिन्हें असफल लोग नहीं करना चाहते। क्योंकि वे अच्छी तरह जानते हैं कि सफलता उन्हीं कामों को करने से मिलती है, जिन्हें करने से ज्यादातर लोग बचते हैं।

सीख

- सफल लोग भी कड़ी मेहनत या मुश्किल काम नहीं करना चाहते, मगर वे फिर भी करते हैं, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते हैं कि सफलता उन्हीं कामों को करने से मिलती है, जिन्हें करना आसान नहीं होता।

कहानी 26

हर दिन प्रेरणा क्यों जरूरी है?

एक बार एक मोटिवेशनल स्पीकर से एक व्यक्ति ने पूछा, "जब मुझे कभी-कभार कहीं से थोड़ी-बहुत मोटिवेशन मिल जाती है, तो एक-दो दिन तक मैं बहुत ही ज्यादा मोटिवेटेड महसूस करता हूँ और बहुत ही ज्यादा मोटिवेटेड रहता हूँ। मगर एक-दो दिन के बाद वह सारी मोटिवेशन खत्म हो जाती है और मैं वापस पुरानी स्थिति में लौट आता हूँ। इसका क्या कारण है कि एक-दो दिन बाद वह सारी मोटिवेशन खत्म हो जाती है और सब कुछ पहले जैसा हो जाता है?"

इस बात पर उस मोटिवेशनल स्पीकर ने उस व्यक्ति से पूछा, "जो भोजन आपने कल खाया था, वह भोजन आज कहाँ है?"

उस व्यक्ति ने कहा, "सर, वह भोजन तो पच गया।"

मोटिवेशनल स्पीकर ने कहा, "पच गया ना! जब एक बार खाया हुआ भोजन ज्यादा समय तक नहीं चल सकता, तो एक बार ली हुई मोटिवेशन ज्यादा समय तक कैसे चल सकती है? जिस प्रकार हमारे शरीर को लंबे समय तक स्वस्थ रहने के लिए हर रोज अच्छे भोजन की जरूरत होती है, उसी प्रकार हमारे दिमाग को भी लंबे समय तक मोटिवेटेड रहने के लिए हर रोज मोटिवेशन की जरूरत होती है। अगर हम हर रोज मोटिवेशन नहीं लेंगे, तो वही होगा जो आज तक होता आया है। एक-दो दिन में सारी मोटिवेशन खत्म हो जाएगी और सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा।"

उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि मोटिवेशन एक आग के समान होती है। जब तक हम आग में घी डालते रहेंगे, तब तक आग जलती रहेगी और अगर हम आग में घी डालना बंद कर देंगे, तो आग

बुझ जाएगी। इसीलिए अगर लंबे समय तक मोटिवेटेड रहना है, तो हमें हर रोज थोड़ी-थोड़ी मोटिवेशन लेते रहनी चाहिए।

सीख

- जिस प्रकार एक बार किया हुआ भोजन ज्यादा समय तक नहीं चल सकता, उसी प्रकार एक बार ली हुई मोटिवेशन भी ज्यादा समय तक नहीं चल सकती। इसीलिए हर रोज थोड़ी-थोड़ी मोटिवेशन लेते रहनी चाहिए।

कहानी 27

डर से बड़ी कोई मुश्किल नहीं

एक बार एक युवक अपने गाँव के पास ही स्थित एक तालाब में नहा रहा था। नहाते वक्त उसे अचानक एक साँप काट लेता है। अब वह यह देखना चाहता है कि उसे किस जीव ने काटा है। वह जल्दी से अपनी नज़रें इधर-उधर घुमाता है, तो अचानक उसे एक मेंढक नज़र आता है। वह सोचता है कि शायद उसे इस मेंढक ने ही काटा है और वह अपनी मस्ती में नहाकर अपने घर चला जाता है। उसे कुछ भी नहीं होता, क्योंकि उसके दिमाग में यह था कि उसे एक मेंढक ने काटा है।

कुछ दिनों बाद वह युवक उसी तालाब में दोबारा नहाने के लिए आता है।

वह आराम से नहा ही रहा होता है कि आज उसे एक मेंढक काट लेता है। वह आज भी यही देखना चाहता है कि इस बार उसे किस जीव ने काटा है। वह फिर से जल्दी-जल्दी अपनी नज़रें इधर-उधर घुमाता है, मगर इस बार उसे एक साँप दिखाई दे जाता है। वह सोचता है कि आज तो उसे साँप ने काट लिया है और अब उसका बच पाना बहुत ही मुश्किल है।

उसे अचानक घबराहट और बेचैनी होने लगती है।

बहुत ज्यादा डर, घबराहट और बेचैनी के कारण अचानक उसे दिल का दौरा पड़ जाता है, जिसकी वजह से उसकी मौत हो जाती है।

सीख

- कभी-कभी मुश्किलें उतनी बड़ी नहीं होतीं, जितनी बड़ी हम उन्हें समझ बैठते हैं, इसलिए मुश्किल परिस्थितियों में डरने के बजाय हिम्मत और धैर्य से काम लेना चाहिए।

कहानी 28

अपनों का साथ

यह एक प्रचलित प्रेरक प्रसंग है, जो हमें अपनों का साथ देने और कठिन समय में उम्मीद बनाए रखने की प्रेरणा देता है|

एक व्यक्ति अपने पुराने घर की मरम्मत करवा रहा था। काम के दौरान जब दीवार का एक हिस्सा हटाया गया, तो उसकी नजर दीवार के भीतर फँसी एक छिपकली पर पड़ी। उसका एक पैर लकड़ी में ठुकी हुई कील के कारण बुरी तरह फँसा हुआ था।

व्यक्ति ने गौर से देखा तो उसे पता चला कि यह मामला काफी पुराना था। दीवार और लकड़ी की स्थिति देखकर अनुमान लगाया गया कि वह कील लगभग पाँच वर्ष पहले मकान बनाते समय ठोकी गई थी।

यह सोचकर वह हैरान रह गया कि इतनी छोटी-सी छिपकली इतने लंबे समय तक इस हालत में कैसे जीवित रही होगी। आखिर उसे भोजन कौन देता रहा होगा?

उसने मरम्मत का काम कुछ समय के लिए रोक दिया और वहीं बैठकर देखने लगा।

थोड़ी देर बाद जो दृश्य उसके सामने आया, उसे देखकर वह भावुक हो गया। एक दूसरी छिपकली अपने मुँह में भोजन लेकर वहाँ पहुँची और उस फँसी हुई छिपकली को भोजन कराने लगी।

तब उसे समझ आया कि शायद वह दूसरी छिपकली लंबे समय से अपने साथी की मदद कर रही थी। जिस जीव को वह असहाय समझ रहा था, वह वास्तव में किसी के निरंतर सहयोग के कारण जीवित था।

यह घटना हमें याद दिलाती है कि मुश्किल समय में किसी का साथ देना कितना महत्वपूर्ण होता है। कई बार हमारी छोटी-सी मदद किसी के लिए जीवन का सबसे बड़ा सहारा बन सकती है।

सीख

- कितना भी खराब समय ही क्यों ना आ जाए पर हमें कभी भी उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए| जब इतना सा जंतु पाँच सालों तक हार नहीं मानता तो फिर हम इंसान क्यों बहुत ही जल्दी उम्मीद छोड़ देते है और हार मान लेते है|
- अपने प्रिय लोगो को कभी ना छोड़े, उनके मुश्किल से मुश्किल समय में भी उन्हें अपनी पीठ ना दिखाए| कठिन समय में भी अपने प्रिय लोगो के साथ बने रहे।

कहानी 29

बाधा नहीं, लक्ष्य देखो

एक बार दो दोस्त जैम्स और विलियम एक दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेने गए। दोनों ने सफलतापूर्वक अपनी-अपनी दौड़ पूरी कर ली। दौड़ के आयोजकों ने वहाँ पर खाने-पीने के लिए फल और जूस आदि का प्रबंध कर रखा था। दौड़ खत्म होने के बाद लोगों को फल और जूस आदि बाँटे जा रहे थे।

फल और जूस को देखकर जैम्स और विलियम के मुँह में पानी आ गया। उन दोनों का भी मन हुआ कि फल और जूस लें। समस्या यह थी कि फल और जूस लेने के लिए एक लंबी लाइन लगी हुई थी।

जैम्स बोला, "चलो विलियम, हम भी फल और जूस ले लेते हैं।"

उस लंबी लाइन को देखकर विलियम बोला, "रहने दो दोस्त, लाइन बहुत ही लंबी है।"

इस पर जैम्स बोला, "ले लेते हैं दोस्त, थोड़ी ही तो मेहनत है बस।"

विलियम ने एक बार फिर से उस लंबी लाइन को देखा और मना कर दिया। लेकिन जैम्स लाइन में लग गया और थोड़ी मेहनत और मशक्कत के बाद 2 केले और एक गिलास जूस लेने में कामयाब रहा। उसने बड़े चाव से केले और जूस का आनंद लिया, जबकि विलियम फल और जूस का आनंद लेने से वंचित रह गया।

फल और जूस दोनों ही दोस्तों को चाहिए थे, लेकिन एक का ध्यान फल और जूस पर था, मगर दूसरे का ध्यान लंबी लाइन पर था।

यह कहानी काफी हद तक हमारे जीवन में भी एकदम सटीक बैठती है। यह छोटी-सी कहानी हमें सिखाती है कि सफल लोग हमेशा अपने लक्ष्यों

पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि असफल लोग हमेशा लक्ष्यों के बीच में आने वाली बाधाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

जैम्स ने फल और जूस को देखा, जबकि विलियम ने फल और जूस के बीच में आने वाली लंबी लाइन को देखा।

सीख

- सफल लोग हमेशा अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि असफल लोग हमेशा अपने लक्ष्यों के बीच में आने वाली बाधाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

कहानी 30

नजर सिर्फ लक्ष्य पर

प्राचीन काल में एक गुरुजी अपने कुछ शिष्यों को धनुर्विद्या सिखाते थे। एक दिन गुरुजी के मन में उनकी परीक्षा लेने का विचार आया। गुरुदेव ने उन सभी शिष्यों को एक पेड़ के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया और कहा, *"शिष्यों, आज आप सभी की परीक्षा है। आज इस बात की परीक्षा है कि मेरे द्वारा दी गई धनुर्विद्या से आप सभी ने कितना सीखा है।"*

इसके बाद गुरुजी ने उस पेड़ की तरफ इशारा करते हुए कहा, "वहाँ देखो, उस पेड़ पर एक नकली चिड़िया लटकी हुई है और उस चिड़िया की आँख आप सभी का लक्ष्य है।"

गुरुदेव ने सबसे पहले एक शिष्य को बुलाया और लक्ष्य साधने को कहा। उस शिष्य ने लक्ष्य साधा तो गुरुदेव ने पूछा, "हे वत्स, बताओ तुम्हें क्या दिख रहा है?" उसने कहा, "आकाश, पृथ्वी..."

गुरुदेव ने उसे रोकते हुए कहा, "ठीक है।"

उसके बाद गुरुदेव ने दूसरे शिष्य को बुलाया और लक्ष्य साधने को कहा। उसने भी लक्ष्य साधा। गुरुदेव ने उससे भी वही सवाल पूछा कि "हे वत्स, बताओ तुम्हें क्या दिख रहा है?"

उसने बोला, "पत्तियों में छुपा हुआ एक पक्षी।" गुरुदेव ने उसे भी रोक दिया।

उसके बाद गुरुदेव ने एक-एक करके अपने सभी शिष्यों को बुलाया और सभी से वही सवाल पूछा और सभी शिष्यों ने वही साधारण-सा जवाब दिया—पेड़, पत्ते, धरती, आकाश या फिर आस-पास की चीजें आदि।

सबसे अंत में गुरुदेव ने अपने सर्वश्रेष्ठ शिष्य को बुलाया और लक्ष्य साधने को कहा। लक्ष्य साधने के बाद गुरुदेव ने उससे भी वही सवाल पूछा कि "बताओ वत्स, तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?"

उसने कहा, "गुरुदेव, मुझे तो केवल पक्षी की आँख दिखाई दे रही है।"

गुरुदेव ने उसका ध्यान भटकाने की कोशिश की और कुछ देर बाद फिर से पूछा, "बताओ वत्स, अब तुम्हें क्या-क्या दिखाई दे रहा है?"

शिष्य ने जवाब दिया, "गुरुदेव, मुझे तो अभी भी केवल और केवल चिड़िया की आँख ही दिखाई दे रही है।" गुरुदेव ने कहा, "ठीक है वत्स।"

गुरुदेव ने अपने उन सभी शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा कि "एक धनुर्धर को उसके लक्ष्य के अतिरिक्त कुछ और दिखाई नहीं देना चाहिए।"

सभी शिष्यों का ध्यान लक्ष्य के अलावा आस-पास की चीजों पर भी था। मगर उनके सर्वश्रेष्ठ शिष्य का ध्यान सिर्फ और सिर्फ अपने लक्ष्य पर ही था। यही बात थी, जिस वजह से वह उनका सर्वश्रेष्ठ शिष्य बन पाया।

सीख

- सफलता प्राप्त करने के लिए हमारा सारा ध्यान सिर्फ और सिर्फ अपने लक्ष्य पर ही होना चाहिए, न कि इधर-उधर।

कहानी 31

पहचान आपके काम से बनती है

एक बार एक पत्रकार एक ऐसे वैज्ञानिक का इंटरव्यू लेने गया, जिसने बहुत सारे आविष्कार किए थे। वह वैज्ञानिक अपने आविष्कारों के लिए बहुत प्रसिद्ध था। इंटरव्यू खत्म होने के बाद उस पत्रकार ने उस वैज्ञानिक का एक फोटो खींचने की अनुमति माँगी, जिसे वह अपने समाचार पत्र में छाप सके। वैज्ञानिक ने फोटो खिंचवाने के लिए हाँ कर दी।

लेकिन उस वैज्ञानिक की वेश-भूषा बहुत ज्यादा अच्छी नहीं थी। उसके कपड़े बहुत गंदे थे और वे कहीं-कहीं से फटे भी हुए थे। उस पत्रकार ने वैज्ञानिक से कहा, "सर, आप इन कपड़ों को बदलकर अच्छे और साफ कपड़े पहन लीजिए, ताकि आपका फोटो ज्यादा अच्छा आ सके। आपका यह फोटो हमारे समाचार पत्र में छपेगा।"

पत्रकार की इस बात पर वैज्ञानिक ने बहुत ही सुंदर जवाब दिया। वैज्ञानिक ने कहा, "लोग मुझे मेरे काम की वजह से जानते हैं, न कि मेरे कपड़ों की वजह से।"

वैज्ञानिक ने आगे कहा, "विज्ञान के क्षेत्र में मैंने बहुत सारा काम किया है। मेरे काम में कोई कमी हो तो बताओ।" वैज्ञानिक की इन बातों का पत्रकार के पास कोई जवाब नहीं था।

मैं यहाँ पर अपने स्कूल के एक गुरुजी का जिक्र करना चाहता हूँ। मेरे गुरुजी मुझसे कहा करते थे कि, "बेटा, अगर तू जिंदगी में अमीर और कामयाब बनना चाहता है, तो एक बात हमेशा याद रखना कि तू चाहे मिस्त्री बन, मगर तेरे शहर में तुझसे अच्छा मिस्त्री कोई और दूसरा नहीं होना चाहिए।

तू चाहे दर्जी बन, मगर तुझसे अच्छा दर्जी तेरे शहर में कोई दूसरा नहीं होना चाहिए। शादियों के समय तेरी दुकान के बाहर लंबी लाइन लगनी चाहिए कि कपड़े सिलवाएँगे तो इसी दर्जी से सिलवाएँगे।

तू चाहे बाल काटने वाला बन, लेकिन तुझसे अच्छा बाल काटने वाला दूर-दूर तक कोई दूसरा तेरे शहर में नहीं होना चाहिए।

तू चाहे जो भी बन, मगर तेरे काम में तुझे टक्कर देने वाला दूर-दूर तक कोई दूसरा नहीं होना चाहिए।"

सीख

- आप चाहे जो भी काम करें, अपने कार्यक्षेत्र में शिखर पर पहुँचने का प्रयास करें।

कहानी 32

अपने मन की राह चुनिए

एक बार एक डॉक्टर अपना एक क्लिनिक चलाता था। सुबह से शाम तक वह अपने क्लिनिक पर बैठता और जो भी मरीज़ आते, वह उनका इलाज करता। उसका क्लिनिक बहुत ज्यादा अच्छा नहीं चलता था। बहुत कम मरीज़ ही उसके पास आना पसंद करते थे। डॉक्टर होने के बाद भी वह आर्थिक रूप से जूझ रहा था। अन्य डॉक्टरों के मुकाबले उसके पास कम मरीज़ अपने इलाज के लिए आते थे।

उस डॉक्टर को नाचना बहुत पसंद था। वह कभी-कभी खाली समय में अपने क्लिनिक में ही मोबाइल पर गाने बजाकर नाचता रहता था। लोग उसको देखकर हँसते थे और पीठ पीछे उसका मज़ाक उड़ाते थे, क्योंकि उसका क्लिनिक बहुत अच्छा नहीं चल रहा था और फिर भी वह नाचता रहता था। शायद इसीलिए वह हँसी का पात्र बन चुका था।

धीरे-धीरे दिन गुज़रे, साल गुज़रे और फिर दशक। उस डॉक्टर के साथ पूरे जीवन में ऐसे ही चलता रहा। न तो वह डॉक्टर अपने काम में अच्छा नाम बना पाया और न ही अच्छा पैसा कमा पाया। उसका पूरा जीवन बेहद मुश्किल रहा।

अब वह डॉक्टर बूढ़ा हो चुका था। अब उसने अपने क्लिनिक को बंद करके रिटायर होने का फैसला किया। उसने अपने रिटायरमेंट पर एक छोटी-सी पार्टी रखी, जिसमें उसने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को बुलाया।

सभी लोग पार्टी में आए। पार्टी में वह डॉक्टर उदास बैठा हुआ था और उसकी आँखें नम थीं। वह उस दिन बहुत ही भावुक था। उसके एक मित्र ने उसे उदास देखा तो उसे लगा कि मेरे मित्र का करियर बहुत ज्यादा अच्छा नहीं रहा, शायद आज वह इसीलिए भावुक हो रहा है।

वह मित्र डॉक्टर से बोला, "रोते क्यों हो मित्र? अब तो तुम रिटायर हो चुके हो। अब तुम्हें क्या तकलीफ़ है? अब तो सभी तकलीफ़ें खत्म हो चुकी हैं।"

डॉक्टर उस मित्र से बोला, "पता है कि मैं एक अच्छा डॉक्टर क्यों नहीं बन पाया? डॉक्टर बनने के बाद भी मैं ज़िंदगी में असफल क्यों रहा?"

उसके मित्र ने पूछा, "क्यों?"

वह डॉक्टर बोला, "क्योंकि मैं कभी डॉक्टर बनना ही नहीं चाहता था।"

फिर उस मित्र ने पूछा, "तो फिर तुम क्या बनना चाहते थे?"

डॉक्टर बोला, "मैं एक डांसर बनना चाहता था। बचपन से ही मुझे डांस का बहुत शौक था। डांस करना मुझे बहुत ही अच्छा लगता था। मुझे जब भी समय मिलता... घर में, क्लिनिक में या फिर कहीं भी, मैं अपने डांस में इतना खो जाता था कि मुझे समय का पता ही नहीं लगता था।"

फिर उस मित्र ने पूछा, "तो फिर तुम डॉक्टर बने ही क्यों?"

डॉक्टर बोला, "अपने घरवालों की वजह से। उन्होंने मेरे ऊपर दबाव बनाया और घरवालों के दबाव में आकर मैं डॉक्टर बन गया। दरअसल, मेरे एक चाचा डॉक्टर थे, जो कि बहुत ही कामयाब थे। वे डॉक्टर बनकर बहुत ही अच्छा पैसा कमा रहे थे। उनको देखकर मेरे घरवालों ने मुझे भी डॉक्टरी में दाखिला दिलवा दिया।"

डॉक्टर बोला, "काश! मैं एक बार हिम्मत करके उनसे मना कर पाता और बोल पाता कि मुझे डॉक्टर नहीं, बल्कि मुझे तो डांसर बनना है, तो शायद आज ज़िंदगी कुछ और ही होती। अगर एक बार अपने घरवालों से डॉक्टर बनने के लिए मना करके उनकी डाँट खा लेता, तो शायद मुझे सारी ज़िंदगी यूँ धक्के नहीं खाने पड़ते।"

सीख

दोस्तो, इस कहानी से सीखने के लिए बहुत कुछ है। इस कहानी से हर उम्र का व्यक्ति कुछ न कुछ सीख सकता है। जैसे कि:

- आपको जीवन में क्या करना है या क्या बनना है, इसका फैसला बहुत सोच-समझकर करे।
- अपने बच्चों को वो बनने दें, जो वो बनना चाहते हैं।
- काम वो करें, जिसमें आपका मन लगता हो, दूसरों को देखकर फैसले न लें।
- एक फैसला आपका पूरा जीवन बना भी सकता है और बिगाड़ भी सकता है। इसीलिए आपको जीवन में क्या करना है, ये सोच-समझकर तय करें।
- जीवन में ऐसा कोई फैसला न लें, जिसके बाद आपको जीवन भर पछताना पड़े।

कहानी 33

अपनी वैल्यू बढ़ाइए

एक बार एक कर्मचारी अपने बॉस के पास अपना इस्तीफा लेकर गया। बॉस ने पूछा, "तुम नौकरी क्यों छोड़ना चाहते हो?" तो कर्मचारी बोला, "क्योंकि कंपनी सिर्फ बीस हजार रुपये महीना देती है।"

बॉस बोला, "यह तो आधी सच्चाई है।"

कर्मचारी बोला, "आधी सच्चाई? वो कैसे?"

बॉस बोलता है, "कंपनी बीस हजार रुपये महीना देती है, यह झूठ है, मगर कंपनी तुमको बीस हजार रुपये महीना देती है, यह बिल्कुल सच है।"

तो कर्मचारी बोला, "एक ही तो बात है, सर।"

बॉस बोला, "तुम रोज आठ घंटे काम करते हो और बीस हजार रुपये महीना कमाते हो। इस कंपनी में ऐसे भी लोग हैं, जो आठ घंटे काम करके ही एक लाख, दो लाख, पाँच लाख या फिर उससे ज्यादा भी कमाते हैं। कंपनी में कुछ ऐसे भी लोग हैं, जिन्होंने तुम्हारे साथ ही शुरुआत की थी और वे आज तुमसे बहुत ज्यादा तनख्वाह ले रहे हैं। जिस काम को करने के लिए कंपनी तुमको बीस हजार रुपये महीना देती है, उसी काम को करने के लिए कंपनी दूसरों को तुमसे कई गुना ज्यादा पैसे भी देती है।"

कर्मचारी पूछता है, "फिर कंपनी मुझे ही बीस हजार रुपये महीना क्यों देती है?"

बॉस बोलता है, "क्योंकि तुम्हारी वैल्यू बीस हजार रुपये की ही है।"

कर्मचारी पूछता है, "तो मैं अपनी तनख्वाह बढ़ाने के लिए क्या करूँ?"

बॉस बोलता है, "अगर तुम अपनी तनख्वाह बढ़ाना चाहते हो तो अपनी वैल्यू बढ़ाना शुरू कर दो। तुम्हारी तनख्वाह अपने आप बढ़ना शुरू हो जाएगी।"

बॉस की बातें सुनकर कर्मचारी को अपनी गलती का एहसास हो गया। उसने अपना इस्तीफा वापस लेकर उसी दिन से अपनी वैल्यू बढ़ाने की प्रक्रिया शुरू कर दी।

आप भी आज से ही अपनी वैल्यू बढ़ाना शुरू कर दें। अपनी वैल्यू बढ़ाने के कुछ तरीके -

आप अपनी वैल्यू को:

1. अच्छी किताबें पढ़कर,

2. लगातार सीखकर,

3. अपनी गलतियों को बार-बार दोहराने के बजाय उनमें सुधार करके,

4. अपने आप को अपडेट रखकर,

5. मेहनत करने से पीछे न हटकर और अपने काम को पूरी ईमानदारी से करके,

6. सकारात्मक लोगों की संगत करके

बढ़ा सकते हैं।

उदाहरण - 1

आपने देखा होगा कि एक ही लॉ कॉलेज से पढ़ने वाले दो वकील अलग-अलग जिंदगी जीते हैं। दोनों ने एक ही किताबें पढ़ीं, दोनों को एक ही शिक्षक ने पढ़ाया और एक ही साथ बैठकर पेपर भी दिए। मगर एक टाइपराइटर लेकर कोर्ट के बाहर बैठा है और दूसरा कोर्ट के अंदर एक-एक केस की लाखों रुपये फीस ले रहा है।

उदाहरण - 2

एक ही मेडिकल कॉलेज से पढ़े हुए दो डॉक्टरों की जिंदगी भी अलग-अलग होती है। दोनों ने एक ही साथ बैठकर पढ़ाई की। दोनों एक ही हॉस्टल में साथ-साथ रहे, दोनों ने एक ही साथ बैठकर खाना खाया है। मगर एक सौ रुपये फीस ले रहा है और दूसरा कई हजार रुपये फीस ले रहा है।

ऐसा क्यों होता है?

क्योंकि सफल लोग लगातार अपनी वैल्यू बढ़ाते रहते हैं। याद रहे, जो लोग बेहतर बनना बंद कर देते हैं, वे बदतर बनना शुरू हो जाते हैं। अगर पानी काफी समय तक एक ही जगह पर रुका रहे तो उसमें से बदबू आने लगती है, वह सड़ जाता है और उसमें काई जम जाती है। इसलिए कभी भी रुके नहीं, अपनी वैल्यू को हमेशा बढ़ाते रहें।

सीख

- अगर आप भी अपने जीवन में सचमुच सफल होना चाहते हैं तो आज और अभी से अपनी वैल्यू बढ़ाना शुरू कर दें।

कहानी 34

कम्फर्ट जोन से बाहर निकलें

मेंढक और गर्म पानी की यह कहानी एक प्रसिद्ध उदाहरण के रूप में कही जाती है। इसका उद्देश्य हमें यह समझाना है कि इंसान किस तरह धीरे-धीरे अपने कम्फर्ट जोन का आदी होता जाता है।

मेंढक के बारे में तो आप सभी को पता ही होगा। मेंढक को अगर एक बर्तन में पानी डालकर उसमें बैठा दिया जाए, और नीचे से आग लगा दी जाए।

जैसे ही पानी हल्का गुनगुना होगा तो मेंढक को आनंद आना शुरू होगा। फिर पानी थोड़ा-सा गर्म होगा तो मेंढक को और भी आनंद आएगा। पानी थोड़ा और भी ज्यादा गर्म होगा तो उसे और भी मज़ा आएगा। मेंढक अगर बर्तन में से बाहर निकलना चाहे तो वह झट से छलाँग लगाकर उस बर्तन से बाहर आ सकता है, लेकिन मेंढक को तो उस बर्तन में मज़ा आ रहा होता है।

लेकिन जैसे ही पानी खौलना शुरू होता है तो उस मेंढक को एहसास हो जाता है कि वह अब बुरी तरह फँस चुका है, और अब वह बाहर निकलना तो चाहता है, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी होती है। अब मेंढक चाहकर भी उस बर्तन में से बाहर नहीं निकल सकता। और वह गर्म पानी, जिसमें शुरुआत में उसको आनंद आ रहा था, अब वही पानी उसकी जान का दुश्मन बन जाता है। और उसके बाद पानी का तापमान लगातार बढ़ने के कारण उस मेंढक की उसी बर्तन के अंदर दर्दनाक मौत हो जाती है।

दोस्तों, जिस पानी में उस मेंढक को शुरुआत में बहुत मज़ा आ रहा था, बाद में वही पानी उसकी मौत का कारण बन जाता है।

इसी तरह से आप लोगों में से बहुत सारे लोग भी उसी मेंढक की तरह उसी बर्तन में बैठे हुए हैं, जिसके नीचे आग लगी हुई है और पानी अभी धीरे-धीरे गर्म हो रहा है, और इसको कहते हैं कम्फर्ट जोन।

अगर आप समय रहते उस बर्तन से बाहर आ गए तो एकदम ठीक है, वरना आपका अंजाम भी उसी मेंढक के जैसा हो सकता है।

दोस्तों, एक बात हमेशा याद रखना कि पानी का जहाज सबसे ज्यादा सुरक्षित समुद्र के किनारे पर खड़ा हुआ होता है, लेकिन उसको समुद्र के किनारे खड़ा रहने के लिए बिल्कुल भी नहीं बनाया गया है, बल्कि उसे तो समुद्र में तूफानों से लड़कर उसे पार करने के लिए बनाया गया है।

उसी तरह से एक हवाई जहाज भी सबसे ज्यादा सुरक्षित जमीन पर ही होता है, लेकिन उसको जमीन पर खड़ा रहने के लिए बिल्कुल भी नहीं बनाया गया है, बल्कि उसे तो बनाया गया है आसमान का सीना चीरकर हवा में उड़ने के लिए।

अगर ये दोनों भी अपने-अपने सुरक्षित स्थानों पर लंबे समय तक खड़े रहे, तो एक दिन ऐसा भी आएगा, जिस दिन ये किसी काम के नहीं रहेंगे। ये दोनों भंगार बन जाएंगे।

सीख

- अपने कम्फर्ट जोन से जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी बाहर निकलें। कहीं ऐसा न हो कि देर हो जाए और आपका हाल भी उस मेंढक जैसा ही हो जाए, जो बर्तन से बाहर तो निकलना चाहता है, मगर अफसोस, बहुत देर हो चुकी होती है और बाद में सिवाय पछताने के कुछ और नहीं बचता।

कहानी 35

जीवन में लक्ष्य क्यों जरूरी है

एक बार एक अध्यापक अपनी कक्षा में विद्यार्थियों से पूछते हैं कि तुम्हारा लक्ष्य क्या है? और तुम जीवन में आगे चलकर क्या बनना चाहते हो?

सभी विद्यार्थी एक-एक करके अध्यापक जी को बताने लगे कि उनका लक्ष्य क्या है और वे जीवन में आगे चलकर क्या बनना चाहते हैं। किसी ने कहा कि मैं आपकी तरह ही अच्छा शिक्षक बनना चाहता हूँ, तो किसी ने कहा कि मैं एक डॉक्टर बनकर लोगों की सेवा करना चाहता हूँ। किसी ने कहा कि मैं सिंगर बनना चाहता हूँ, तो किसी ने कहा कि मैं एक सफल वैज्ञानिक बनकर देश के विकास में योगदान देना चाहता हूँ।

मगर कुछ विद्यार्थी ऐसे भी थे, जिन्होंने अभी तक अपने लक्ष्य तय ही नहीं किए थे। उनको पता ही नहीं था कि उन्हें जीवन में आगे चलकर क्या बनना है। जिन विद्यार्थियों का कोई लक्ष्य नहीं था, अध्यापक जी ने उनसे एक सवाल पूछा कि अगर आप घर से निकल चुके हो, मगर आपको यह नहीं पता कि आपको जाना कहाँ है, तो आप कहाँ पहुँचोगे?

छात्रों ने जवाब दिया कि पता नहीं कहाँ पहुँचेंगे, सिर्फ इधर-उधर भटकते रहेंगे, कहीं भी नहीं पहुँचेंगे इत्यादि।

फिर अध्यापक जी ने उनसे पूछा कि अगर आपको ताजमहल घूमने के लिए आगरा जाना है, तो आप लोग कैसे जाओगे? तो सभी विद्यार्थी एक-एक करके जवाब देने लगे। कोई बोला, "सर, रेल से जाएँगे, सीधे वहीं छोड़ेगी।" किसी ने कहा कि बस का रास्ता अच्छा रहेगा, मैं तो बस से जाना पसंद करूँगा। किसी ने कार और किसी ने मोटरसाइकिल से जाने की बात कही।

अब अध्यापक जी ने कहा कि बच्चों, मैं आप सभी को यही बात समझाना चाहता हूँ कि अगर आपको पता है कि जीवन में आपको कहाँ

पर पहुँचना है, तो आप वहाँ पर एक दिन पहुँच ही जाओगे। लेकिन अगर आपको पता ही नहीं है कि आपको पहुँचना कहाँ है, तो आप कभी कहीं नहीं पहुँच पाओगे। इसीलिए हमारे जीवन में किसी लक्ष्य का होना बहुत जरूरी है। जिस व्यक्ति का कोई लक्ष्य नहीं होता, वह व्यक्ति जीवन में कभी कोई बड़ा काम नहीं कर सकता।

उन्होंने आगे कहा कि जब हम लोग कहीं तीन-चार दिन के लिए घूमने जाते हैं, तो हम कई दिन पहले से ही योजना बनाना शुरू कर देते हैं कि रेल से जाएँगे, बस से जाएँगे या फिर गाड़ी से जाएँगे, कौन-से होटल में रुकेंगे, कौन-कौन से कपड़े लेकर जाएँगे और वहाँ पर क्या-क्या करेंगे इत्यादि। मगर जीवन के इतने बड़े सफर में हमें क्या बनना है, क्या-क्या हासिल करना है और कहाँ पर पहुँचना है, हम इसकी कभी योजना ही नहीं बनाते।

अगर आप कभी रेलवे स्टेशन जाएँ, तो टिकट की खिड़की पर टिकट वाला आपसे पूछता है कि कहाँ की टिकट चाहिए और अगर आप कह दो कि कहीं की भी दे दो, तो वह आपको कहीं की भी टिकट नहीं देता। इसीलिए अगर आप लक्ष्य नहीं बनाते हैं, तो आप कभी सफलता की सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकते। इसीलिए जीवन में लक्ष्य का होना बहुत आवश्यक है।

सीख

- बिना लक्ष्य का जीवन बिना पते की चिट्ठी की तरह होता है, जो कहीं भी नहीं पहुँचता। इसीलिए अपने लक्ष्य तय करें और उन्हें हासिल करने के लिए आगे बढ़ें।
- जिस व्यक्ति का कोई लक्ष्य नहीं होता, वह व्यक्ति जीवन में कभी कोई बड़ा काम नहीं कर सकता।

कहानी 36

दर्द तो सहना ही पड़ेगा

यह एक प्रचलित प्रेरक प्रसंग है, जिसे अलग-अलग रूपों में लंबे समय से सुनाया जाता रहा है। इसका उद्देश्य हमें यह सिखाना है कि सफलता पाने के लिए कठिनाइयों और संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

एक बार एक मूर्तिकार को एक मूर्ति बनाने का ऑर्डर मिला। मूर्तिकार मूर्ति बनाने के लिए कहीं से दो बड़े-बड़े पत्थर ले आया। जैसे ही उसने मूर्ति बनाने के लिए छैनी और हथौड़े से पत्थर पर वार किया, तो अचानक पत्थर के अंदर से एक आवाज़ आई, "रुको... मुझे दर्द हो रहा है... मुझे छोड़ दो।"

मूर्तिकार ने उस पत्थर को छोड़ दिया और दूसरे पत्थर पर छैनी और हथौड़े से वार करने लगा। वार करते समय मूर्तिकार ने दूसरे पत्थर से पूछा, "क्या तुम्हें भी दर्द हो रहा है?" पत्थर ने जवाब दिया, "हाँ! मुझे भी दर्द हो रहा है, पर तुम अपना काम जारी रखो।"

मूर्तिकार ने मूर्ति बनाने का कार्य जारी रखा और चोट मारता रहा। कुछ ही घंटों में वह पत्थर एक शानदार मूर्ति में बदल गया और वह पहला पत्थर, जो दर्द नहीं सह सका था, वहीं पड़ा हुआ था।

जिन्होंने मूर्ति बनाने का ऑर्डर दिया था, वे लोग मूर्ति लेने आए। वे उस सुंदर मूर्ति को बहुत ही खुशी-खुशी अपने साथ ले जाने लगे। जाते-जाते उनमें से एक आदमी ने उस मूर्तिकार से पूछा, "यह जो पत्थर यहाँ पर पड़ा हुआ है, क्या हम इसे भी साथ ले जा सकते हैं?"

(यह वही पत्थर था, जो दर्द सह नहीं सका था।)

मूर्तिकार ने कहा, "यह मेरे तो किसी काम का है नहीं, आप इसे ले जा सकते हैं, पर तुम इसका करोगे क्या?"

तो वह आदमी बोला, "जब लोग दर्शन के लिए आएँगे, तो यह पत्थर नारियल फोड़ने के काम आएगा।"

इतना कहकर वे लोग उस पत्थर को भी अपने साथ ले गए।

मूर्ति मंदिर में लगाई गई और वह पत्थर नारियल फोड़ने वाली जगह पर लगाया गया। अब हर रोज़ मूर्ति की पूजा होती और उस पत्थर के ऊपर सुबह से शाम तक कई सारे नारियल फोड़े जाते, जिसके कारण उस पत्थर को काफी ज्यादा दर्द सहना पड़ता।

उस पत्थर ने मूर्ति से पूछा, "मुझे इतना ज्यादा दर्द क्यों सहना पड़ रहा है?"

तो मूर्ति ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "अगर पहले दर्द सह लेता, तो आज इतना ज्यादा दर्द नहीं सहना पड़ता।"

दोस्तों, इस दुनिया में भी ज्यादातर लोग उस पहले पत्थर की तरह ही होते हैं, जो पहले दर्द नहीं सहते और फिर उन्हें सारी ज़िंदगी दर्द सहना पड़ता है।

दर्द तो सहना ही पड़ेगा, चाहे पहले सह लो या बाद में। फैसला आपका है कि आपको अपने जीवन के शुरुआती कुछ साल दर्द सहना है या फिर पूरी ज़िंदगी।

सीख

- सफल लोग लंबे समय के फायदे के लिए थोड़े समय का दर्द सहते हैं और असफल लोग थोड़े समय के फायदे के लिए लंबे समय तक दर्द सहते हैं।
- आपको तय करना है कि आपको ज़िंदगी में मेहनत का दर्द सहना है या फिर पछतावे का।

कहानी 37

नकारात्मकता को अंदर मत आने दो

जब भी मैं अपने दोस्तों को बताता था कि मैं एक किताब लिख रहा हूँ, जिसको पढ़कर लोग मोटिवेट होंगे, उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा और उन्हें जीवन में सफल होने में बहुत मदद मिलेगी। मेरी इन बातों को सुनकर वे मुझ पर हँसते थे। कोई कहता था कि किताब लिखने के लिए बहुत दिमाग चाहिए, ये तेरे बस की बात नहीं है।

कोई कहता था कि बारहवीं कक्षा पास करने में तुझे तीन साल और बी.ए. पास करने में तुझे पूरे छह साल लगे थे। तू खुद तो जिंदगी में सफल हो नहीं पाया है, तू क्या दूसरों को सफल होने में उनकी मदद करेगा। किसी ने कहा कि तेरी किताब पढ़ेगा कौन.... सिर्फ तू और तेरे घर वाले, और कोई नहीं।

तो किसी ने कहा कि लोग सिर्फ और सिर्फ सफल लोगों को ही पढ़ना पसंद करते हैं, ना कि तेरे जैसे असफल लोगों को। वे लोग जितनी भी नेगेटिव बातें मेरे बारे में कर सकते थे, वे लोग उतनी नेगेटिव बातें मेरे बारे में करते थे। उनकी नेगेटिव बातों को सुनकर मेरा आत्मविश्वास गिर जाता था और मैं पूरी तरह से नेगेटिव हो जाता था। एक दिन तो हद ही हो गई। मेरे तीन-चार दोस्तों ने इस बात को लेकर मेरा जमकर मजाक उड़ाया। उनकी नेगेटिव बातें मेरे ऊपर इस तरह हावी हुईं कि अब मेरा मन इस किताब को लिखने के कार्य को बंद करने का भी होने लगा।

एक दिन जब मैं घर में उदास बैठा हुआ था, तो मेरे पिताजी मेरी शारीरिक भाषा और मेरा चेहरा देखकर समझ गए कि मैं उदास हूँ। वो मेरे पास आए और उन्होंने मुझसे मेरी उदासी का कारण पूछा। तो मैंने उन्हें बताया कि मैं एक किताब लिख रहा हूँ और जब मैं ये बात अपने दोस्तों को बताता हूँ, तो वे लोग मुझ पर हँसते हैं, मेरा मजाक उड़ाते हैं

और मुझसे तमाम तरह की नेगेटिव बातें कहते हैं, जिनको सुनकर मेरा आत्मविश्वास एकदम से गिर जाता है और मैं पूरी तरह से नेगेटिव हो जाता हूँ।

पिताजी ने मुझसे कहा कि वे लोग तुमको नेगेटिव नहीं करते, बल्कि तुम उन्हें अपने आप को नेगेटिव करने देते हो। बेटा, कोई भी व्यक्ति तुमको तब तक नेगेटिव नहीं कर सकता, जब तक तुम उस नेगेटिविटी को अपने अंदर ना आने दो। उन्होंने इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण दिया कि समुद्र चाहे कितना ही बड़ा और गहरा क्यों ना हो, उसमें पानी चाहे कितना ही ज्यादा क्यों ना हो, वो पानी किसी भी जहाज को तब तक नहीं डुबा सकता, जब तक वो जहाज उस पानी को अपने अंदर ना आने दे।

उसी तरह से हमारे आस-पास चाहे कितनी भी नेगेटिविटी क्यों ना फैली हुई हो, वो नेगेटिविटी हमको तब तक नेगेटिव नहीं कर सकती, जब तक हम उस नेगेटिविटी को अपने अंदर ना आने दें।

मुझे पिताजी की बात अच्छे से समझ में आ गई और मैंने अपनी इस किताब को लिखने का कार्य जारी रखा। उस दिन से लेकर आज तक जब भी कोई मुझसे नेगेटिव बातें करता है, तो मैं उस नेगेटिविटी को अपने अंदर नहीं आने देता।

सीख

- समुद्र चाहे कितना ही बड़ा या गहरा क्यों ना हो, उसमें पानी कितना ही ज्यादा क्यों ना हो, वो पानी एक जहाज को तब तक नहीं डुबा सकता, जब तक वो जहाज उस पानी को अपने अंदर ना आने दे। उसी तरह से कोई भी व्यक्ति आपको तब तक नेगेटिव नहीं कर सकता, जब तक आप उस नेगेटिविटी को अपने अंदर ना आने दें।

कहानी 38

सफलता की कीमत

एक बार एक लड़के का सिविल सर्विसेस में चयन हो गया और वह बहुत बड़ा अफसर बन गया। आज उसके घर में उत्सव का माहौल था। बधाइयाँ देने वालों का ताँता लगा हुआ था। लोग दूर-दूर से बधाइयाँ देने आ रहे थे। आज उसके माँ-बाप की आँखों में खुशी के आँसू थे।

अचानक उनका एक परिचित भी वहाँ आया और बधाई देते हुए उस लड़के से बोला कि बड़े ही किस्मत वाले हो तुम, जो तुम बहुत बड़े अफसर बन गए हो। तुम्हारी किस्मत तो बहुत अच्छी है।

उस लड़के को उस आदमी की ये बात बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी। वह लड़का उस आदमी से बोला, "आइए, मैं आपको बताता हूँ कि किस्मत ने मुझे क्या दिया है। मैं पिछले चार सालों से लगातार सिविल सर्विसेस की तैयारी कर रहा था और पिछले तीन साल लगातार असफल हुआ। मगर मैंने फिर भी हिम्मत नहीं हारी। ये मेरा आखिरी प्रयास था। आपको सिर्फ वह दिखाई दे रहा है जो मैंने पाया है। मगर इसको पाने के लिए मुझे जो कुछ खोना पड़ा है, आपको वह दिखाई नहीं दे रहा है। मैं आपको बताता हूँ कि इस मुकाम पर पहुँचने के लिए मुझे क्या-क्या खोना पड़ा है।

चार सालों तक मैं हर रोज सूरज से भी पहले उठा हूँ और देर रात को सोया हूँ। जब लोग त्योहार मना रहे होते थे, तब मैं अपने सपने को पूरा करने के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रहा होता था। अपने सपने को पूरा करने के लिए मुझे अपने दोस्तों और घर-परिवार की शादियाँ तक छोड़नी पड़ीं।

पिछले चार सालों में मैंने 16 हजार घंटे से भी ज्यादा अपनी पढ़ाई को दिए हैं। अगर आपका गणित अच्छा है तो हर साल 4 हजार घंटे, और अगर आपका गणित और भी अच्छा है तो हर रोज 10 घंटों से भी ज्यादा

और वो भी बिना छुट्टी के। मैं पिछले 4 सालों से हर रोज लगातार 10 घंटे से भी ज्यादा सिर्फ पढ़ाई ही कर रहा था। और आप कहते हैं कि मेरी किस्मत बहुत अच्छी है, मैं किस्मत से बड़ा अफसर बन गया। सिविल सर्विसेस का पेपर पास करने के लिए लोग दिन-रात कड़ी मेहनत करते हैं।

वे लोग खाना-पीना, हँसना-रोना, सब कुछ भूल जाते हैं। जाइए और एक बार जाकर देखिए कि वो कैसी जिंदगी जीते हैं। कोई भी व्यक्ति किस्मत से बड़ा अफसर नहीं बनता, बल्कि वो लोग तो उस मुकाम पर पहुँचने के लिए एक बहुत बड़ी कीमत चुकाते हैं, और वो कीमत होती है उनकी कई सालों की मेहनत। वे लोग अपनी लगन, कड़ी मेहनत और संकल्प के साथ लंबे समय तक मेहनत करके उस मुकाम पर पहुँचने की एक भारी-भरकम कीमत चुकाते हैं। कोई व्यक्ति कोई भी बड़ा काम किस्मत से नहीं, बल्कि मेहनत से करता है, किस्मत तो जुए में आजमाई जाती है।

ये बात बिल्कुल ठीक है दोस्तों कि सफल लोग सफलता को पाने के लिए उस सफलता की कीमत चुकाते हैं और वह कीमत होती है उनकी कड़ी मेहनत। सफलता की कीमत चुकाए बिना कोई भी व्यक्ति सफलता हासिल नहीं कर सकता। दुनिया में आज जितने भी लोग बुलंदियों पर हैं, उन सभी ने सफल होने के लिए अपनी उस सफलता की कीमत चुकाई है।

उस लड़के ने भी लगातार चार सालों तक हर रोज 10 घंटों से भी ज्यादा पढ़ाई करके अपनी सफलता की कीमत चुकाई थी।

ओलंपिक में अपने देश के लिए मेडल जीतने वाले खिलाड़ी भी मेडल जीतने के लिए हर रोज 10-12 घंटे कड़ी मेहनत करते हैं। उनकी ये कड़ी मेहनत ही उनकी सफलता की कीमत होती है।

अब मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि अगर आप हर रोज 10 से 12 घंटों तक पढ़ाई करें तो क्या आप I.A.S. या I.P.S. नहीं बन सकते ?

अगर आप हर रोज 10 से 12 घंटों तक अपने मनपसंदीदा खेल का अभ्यास करें तो क्या आप अपने देश के लिए मेडल नहीं जीत सकते ?

आप ऐसा बिल्कुल कर सकते हैं, मगर इससे पहले आपको खुद से एक सवाल पूछना होगा कि क्या आप अपनी इस सफलता को पाने के लिए उसकी कीमत चुकाने को तैयार हैं? आप जिंदगी में जितना चाहे उतने सफल हो सकते हैं, बस आपको अपनी उस सफलता को पाने के लिए उसकी कीमत चुकानी होगी।

सीख

- सफल लोग सफलता को पाने के लिए उस सफलता की कीमत चुकाते हैं, और वो कीमत होती है उनकी कड़ी मेहनत|

कहानी 39

पीछे मुड़कर मत देखो

एक बार हमारे स्कूल के प्रधानाचार्य जी ने हम सभी विद्यार्थियों से एक सवाल पूछा कि बच्चों, बताओ कि शेर ज्यादा तेज दौड़ता है या फिर हिरण? सभी बच्चों ने एक ही आवाज़ में कहा कि शेर।

प्रधानाचार्य जी ने कहा कि नहीं, आपको लगता है कि शेर हिरण का शिकार कर लेता है, इसलिए शेर की रफ्तार हिरण से ज्यादा होती होगी। उन्होंने कहा कि मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हिरण की रफ्तार तकरीबन 80 कि.मी. प्रति घंटा होती है और शेर की रफ्तार तकरीबन 60 कि.मी. प्रति घंटा। दोनों की रफ्तार में इतना अंतर होने के बावजूद भी ज्यादातर मौकों पर हिरण शेर का शिकार बन ही जाता है।

क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हिरण को लगता है कि वह शेर से कमजोर है और यही खौफ उसे बार-बार पीछे मुड़कर देखने को मजबूर करता है, जिसके कारण हिरण का हौसला और रफ्तार दोनों कम हो जाते हैं और वह शेर का शिकार बन जाता है। लेकिन दूसरी तरफ शेर अपना पूरा ध्यान सिर्फ और सिर्फ अपने शिकार पर लगाकर उसके पीछे दौड़ता है। इसलिए शेर की रफ्तार कम होने के बावजूद भी वह हिरण को दबोच ही लेता है।

अगर हिरण को ये विश्वास हो जाए कि उसकी ताकत उसकी तेज गति में छिपी हुई है और वो पीछे मुड़ने की अपनी इस आदत को छोड़ दे, तो शेर कभी भी उसका शिकार नहीं कर सकता।

सीख

- आप अपने लक्ष्य पर अडिग रहें और पीछे मुड़कर न देखें। कोई आप पर भरोसा करे या न करे, आपको खुद पर भरोसा होना चाहिए।

कहानी 40

अपना रिकॉर्ड खुद तोड़ो

एक बार एक सफल बिजनेसमैन से पूछा गया कि आप बहुत बड़े बिजनेसमैन बन गए हैं। आपकी कंपनी बहुत बड़ी बन चुकी है और आपका बिजनेस दिन-रात बढ़ता ही जा रहा है। अब आप किस-किस बिजनेसमैन को पीछे छोड़ना चाहते हैं?

इस बात का उन्होंने बहुत ही शानदार जवाब दिया। उन्होंने कहा कि, मैं किसी को पीछे नहीं छोड़ना चाहता, बल्कि मैं तो सिर्फ खुद को आगे निकालना चाहता हूँ। मैं कभी भी दूसरों से मुकाबला नहीं करता, मैं तो सिर्फ खुद से ही मुकाबला करता हूँ। मैं हर रोज अपने पुराने प्रदर्शन से बेहतर प्रदर्शन करने की कोशिश करता हूँ।

मैं हमेशा अपने ही पुराने रिकॉर्ड्स को तोड़ने की कोशिश करता हूँ। सभी लोगों को अपनी तारीफ सुनना बहुत अच्छा लगता है। लेकिन मैं अक्सर अपने दोस्तों और साथियों से अपनी कमियों के बारे में पूछता हूँ। मैं उनसे कहता हूँ कि वे मेरी तारीफ करने के बजाय मुझे मेरी कमियाँ बताएँ। फिर मैं उन कमियों को दूर करके खुद को और बेहतर बनाने का प्रयास करता हूँ। और मैं हर दिन सिर्फ वही कार्य करता हूँ जो मुझे मेरे लक्ष्यों के करीब ले जाते हैं। मैं कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करता जो मुझे मेरे लक्ष्यों से विपरीत दिशा में ले जाए।

उनकी बातों से पता चलता है कि क्यों वे अपने जीवन में इतने सफल हो पाए। दोस्तों, उस व्यक्ति ने बहुत ही कम शब्दों में हमें सफलता का सूत्र दे दिया।

सीख

- खुद से ही मुकाबला करें, अपने पुराने प्रदर्शन से बेहतर प्रदर्शन करें, अपने ही पुराने रिकॉर्ड्स को तोड़ें और हर दिन वही कार्य करें जो आपको अपने लक्ष्यों के करीब ले जाएँ।

कहानी 41

कुछ तो लोग कहेंगें, लोगों का काम है कहना

मैं आपको एक मजेदार बात बताना चाहता हूँ, लोगों को बोलने में मज़ा आता है। आप कुछ भी करो, लोग तो बोलेंगे ही।

जैसे कि, अगर आप ढेर सारे पैसे कमाने लग जाते हैं, तो वे कहेंगे कि ज़रूर ये कोई दो नंबर का काम कर रहा होगा। और अगर आप पैसे नहीं कमा पाते हैं, तो वही लोग कहेंगे कि बताओ, इतना बड़ा हो गया है और अभी तक कुछ कमाता-धमाता नहीं है, निकम्मा कहीं का।

अगर आप खुद पर ज़्यादा पैसे खर्च करते हैं, तो लोग कहेंगे कि देखो, कितना ज़्यादा दिखावा करता है। और अगर आप खुद पर कम खर्च करेंगे, तो वही लोग कहेंगे कि कितना कंजूस आदमी है।

अगर आप अपने माँ-बाप के साथ रह रहे हो, तो लोग कहेंगे कि इतना बड़ा हो गया है और अभी तक अपने माँ-बाप के टुकड़ों पर ही पल रहा है। और अगर आप अपने माँ-बाप से अलग रहते हैं, तो वही लोग कहेंगे कि चार पैसे क्या कमा लिए, अपने माँ-बाप को बुढ़ापे में अकेला छोड़कर चला गया, कितना नालायक बेटा है।

अगर आप जिम जाकर अच्छी बॉडी बना लो, तो लोग कहेंगे कि ज़रूर इसने कोई पाउडर या दवाई खाकर बॉडी बनाई होगी। और अगर आप फिट नहीं हो, तो वही लोग आपके मोटापे का मज़ाक उड़ाएँगे।

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि लोगों के पास आपके बारे में कहने के लिए हमेशा कुछ न कुछ होगा। उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या करते हैं और क्या नहीं। लेकिन फैसला आपको करना है कि आपको

अपना ध्यान लोगों की बातें सुनने में लगाना है या फिर अपने सपनों को पूरा करने में।

सीख

- लोगों को बोलने में मज़ा आता है। आप कुछ भी करो, वे तो बोलेंगे ही। इसलिए आपको जो सही लगता है, आप वही करें, लोगों को बोलने दीजिए|

कहानी 42

अपनी जड़ों को मत भूलो

एक बार एक देश का सबसे अमीर व्यक्ति एक होटल में खाना खाने गया। खाना खाने के बाद उसने वेटर को दस डॉलर की टिप दी। टिप लेने के बाद वह वेटर उस आदमी को हैरानी से देखने लगा। उस व्यक्ति को यह थोड़ा अजीब लगा, इसलिए उसने वेटर से उसकी हैरानी का कारण पूछा। तो वेटर ने उसे बताया कि सर, कुछ दिन पहले ही आपकी बेटी भी हमारे होटल में खाना खाने आई थी और उन्होंने मुझे सौ डॉलर की टिप दी थी। मगर आप तो उसके पिता और इस देश के सबसे अमीर व्यक्ति भी हैं। आपने फिर भी मुझे सिर्फ दस डॉलर की ही टिप क्यों दी?

वेटर की इस बात पर वह व्यक्ति थोड़ा-सा मुस्कुराया और कहा, "उसने आपको सौ डॉलर की टिप दी क्योंकि वह देश के सबसे अमीर व्यक्ति की बेटी है और मैंने आपको दस डॉलर की टिप ही दी क्योंकि मैं एक गरीब किसान का बेटा हूँ।"

दोस्तों, यह छोटी-सी घटना हमें बताती है कि इंसान को अपने अच्छे समय में अपने बुरे समय को कभी नहीं भूलना चाहिए।

सीख

- हमें अपने अच्छे समय में भी अपनी जड़ो से जुड़ा रहना चाहिएँ, क्योंकि मजबूत पेड़ वही होता है जिसकी जड़ें मजबूत होती हैं।

कहानी 43

अपनी धार तेज करो

एलेक्स नाम का एक लकड़हारा हर रोज़ जंगल में लकड़ी काटने जाता और फिर उन लकड़ियों को बेचकर अपना घर चलाता था। एलेक्स काफी मेहनती था। वह हर रोज़ दस से बारह घंटों तक मेहनत करके लकड़ियाँ काटा करता था। कुछ समय बाद रॉबर्ट नाम का एक नया लकड़हारा भी उसी जंगल में लकड़ियाँ काटने आने लगा। रॉबर्ट एलेक्स जितना मेहनती नहीं था। रॉबर्ट दिन भर में सिर्फ पाँच से छह घंटे तक ही लकड़ियाँ काटा करता था, मगर पाँच से छह घंटों में ही रॉबर्ट एलेक्स से ज्यादा लकड़ियाँ काट दिया करता था।

एलेक्स रॉबर्ट को देखकर सोचता कि रॉबर्ट मुझसे आधी मेहनत करता है, लेकिन फिर भी हर रोज़ मुझसे ज्यादा लकड़ियाँ कैसे काट लेता है।

एक दिन एलेक्स ने रॉबर्ट से पूछा, "रॉबर्ट, मैं हर रोज़ तुमसे दोगुनी मेहनत करता हूँ, मगर फिर भी तुमसे कम ही लकड़ियाँ काट पाता हूँ और तुम हर रोज़ मुझसे आधी मेहनत ही करते हो, मगर फिर भी तुम मुझसे ज्यादा लकड़ियाँ काट लेते हो।"

एलेक्स ने रॉबर्ट से कहा, "रॉबर्ट, क्या तुम मुझे बता सकते हो कि तुम मुझसे आधी मेहनत करने के बाद भी मुझसे ज्यादा लकड़ियाँ कैसे काट लेते हो?"

इस पर रॉबर्ट ने एलेक्स से पूछा, "एलेक्स, क्या तुम हर रोज़ अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज़ करते हो?"

एलेक्स ने कहा, "नहीं।"

रॉबर्ट ने एलेक्स से कहा कि यही वजह है कि तुम मुझसे दोगुनी मेहनत करने के बाद भी मुझसे कम लकड़ियाँ काट पाते हो और मैं तुमसे आधी मेहनत करने के बाद भी तुमसे ज्यादा लकड़ियाँ काट लेता हूँ।

रॉबर्ट ने एलेक्स को बताया, "मैं हर पेड़ को काटने के बाद थोड़ी देर के लिए काम रोक देता हूँ और अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज़ करता हूँ। अगर तुम भी कम समय में ज्यादा लकड़ियाँ काटना चाहते हो, तो तुम्हें भी हर पेड़ को काटने के बाद अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज़ करनी होगी।"

दोस्तों, आपका दिमाग आपकी कुल्हाड़ी है। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि क्या आप हर रोज़ अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज़ करते हो?

सीख

- अगर आप भी जीवन में बेहतर परिणाम चाहते हैं, तो आपको भी हर रोज़ अपनी कुल्हाड़ी (दिमाग) की धार तेज़ करनी होगी।

कहानी 44

छोटी-छोटी बातों को भूलना सीखो

एक लड़का था, जो छोटी-छोटी बातों की बहुत ज्यादा टेंशन लिया करता था और उन छोटी-छोटी बातों को लंबे समय तक अपने दिमाग में रखता था। जैसे कि कभी उसके शिक्षक द्वारा उसे डाँट दिया जाना, कभी किसी परीक्षा में कम अंक आना या फिर विद्यालय में कभी किसी सहपाठी से बहस हो जाना। वह ऐसी छोटी-छोटी बातों की बहुत ज्यादा टेंशन लेता था और उन्हें लंबे समय तक अपने दिमाग में रखता था।

इस बात को लेकर उसके माता-पिता उसे अक्सर समझाते रहते थे कि बेटा, ऐसी छोटी-छोटी बातों को इतनी ज्यादा गंभीरता से नहीं लेना चाहिए। ये तो हमारे जीवन का हिस्सा हैं। हमें ऐसी छोटी-छोटी बातों को भूलकर आगे बढ़ना चाहिए। इन्हें ज्यादा समय तक अपने दिमाग में रखने से कोई फायदा नहीं है।

एक दिन उसके माता-पिता ने उसे समझाने के लिए उससे एक गिलास पानी लाने को कहा। जब वह लड़का पानी ले आया, तो उसके पिता ने उसे समझाते हुए कहा, "बेटा, तुम्हारे हाथ में जो यह पानी का गिलास है, अगर तुम्हें यह गिलास सिर्फ कुछ मिनट तक पकड़कर रखना पड़े, तो तुम्हें कोई खास तकलीफ नहीं होगी। लेकिन अगर यही पानी का गिलास तुम्हें दो-चार घंटों तक पकड़कर रखना पड़ जाए, तो तुम्हारे हाथ में दर्द होने लगेगा और अगर यही पानी का गिलास तुम्हें दस-बारह घंटों तक पकड़कर रखना पड़ जाए, तो तुम्हारा हाथ सुन्न पड़ जाएगा और तुम्हें बहुत ज्यादा दर्द होगा।"

पिता ने आगे कहा, "बेटा, जरा सोचो कि पानी के गिलास का वजन तो उतना ही है, लेकिन तुम इसे जितनी ज्यादा देर तक पकड़कर रखोगे, यह तुम्हें उतना ही ज्यादा भारी लगेगा।"

"बेटा, इस बात से तुम्हें समझ जाना चाहिए कि तनाव और चिंता भी पानी के गिलास के जैसे ही होते हैं। अगर ये कुछ देर के लिए हमारे दिमाग में रहें, तब तक तो ठीक है। लेकिन ये ज्यादा देर तक हमारे दिमाग में रहें, तो हम डिप्रेशन का शिकार हो सकते हैं।"

इस उदाहरण से वह लड़का समझ गया कि छोटी-छोटी बातों को हमें बहुत ज्यादा समय तक अपने दिमाग में रखने की बजाय उन्हें भूल जाना ही बेहतर है। उसने अपने माता-पिता से वादा किया कि वह अब कभी भी छोटी-छोटी बातों को बहुत ज्यादा गंभीरता से नहीं लेगा और उन्हें भूलकर आगे बढ़ेगा।

सीख

- छोटे-छोटे तनाव और चिंताओं को जितनी ज्यादा देर तक हम अपने दिमाग में रखते हैं, ये तनाव और चिंताएँ हमें उतनी ही ज्यादा भारी लगने लगती हैं। इसलिए हमें छोटे-छोटे तनाव और चिंताओं को बहुत ज्यादा समय तक अपने दिमाग में रखने की बजाय उन्हें भूलकर आगे बढ़ना चाहिए।

कहानी 45

सफलता की भूख

एक युवक कई दिनों से सफलता पाने का रास्ता खोज रहा था। उसने बहुत-सी किताबें पढ़ीं, कई लोगों से सलाह ली, लेकिन उसे कोई ऐसा रास्ता नहीं मिला, जिससे वह अपने जीवन में बड़ी सफलता हासिल कर सके।

एक दिन वह एक अनुभवी ऋषि के पास पहुँचा और बोला, "गुरुदेव, मैं जीवन में सफल होना चाहता हूँ। कृपया मुझे सफलता का कोई ऐसा मंत्र बताइए, जिसे अपनाकर मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकूँ।"

ऋषि मुस्कुराए और बोले, "अगर तुम सच में सफलता का रहस्य जानना चाहते हो, तो कल सुबह मेरे साथ चलना।"

अगले दिन ऋषि उस युवक को अपने साथ एक तालाब के किनारे ले गए। उन्होंने युवक से कहा, "तालाब में मेरे साथ थोड़ा आगे तक चलो।"

युवक ऋषि के साथ पानी में उतर गया। कुछ दूर जाने के बाद ऋषि ने अचानक उसके कंधों को पकड़कर उसे कुछ देर के लिए पानी के अंदर झुका दिया।

युवक घबरा गया। वह किसी तरह अपने आपको बाहर निकालने की कोशिश करने लगा। जब युवक का शरीर ढीला पड़ने लगा, तो ऋषि ने उसे छोड़ दिया।

बाहर आते ही युवक ने एक गहरी साँस ली। कुछ पल बाद जब उसकी साँस सामान्य हुई, तो ऋषि ने पूछा, "जब तुम पानी के अंदर थे, तब तुम्हें सबसे ज्यादा किस चीज़ की जरूरत महसूस हो रही थी?"

युवक ने कहा, "गुरुदेव, उस समय मुझे सबसे ज्यादा हवा की जरूरत महसूस हो रही थी।"

ऋषि ने कहा, "बस, यही सफलता का रहस्य है।"

"जिस दिन तुम्हारे अंदर सफलता पाने की वैसी ही तीव्र इच्छा होगी, जैसी तीव्र इच्छा तुम्हें साँस लेने की उस समय हो रही थी, जब तुम पानी के अंदर थे, तो सफलता तुम्हें जरूर मिल जाएगी।"

युवक को अपनी गलती समझ आ गई। वह सफलता चाहता तो था, लेकिन उसके अंदर सफलता पाने की तीव्र इच्छा नहीं थी।

सीख

- दोस्तों जिस तरह से आग की छोटी-छोटी लपटे ज्यादा गर्मी नहीं दे सकती, उसी तरह से कमजोर इच्छाशक्ति भी आपको कभी बड़े परिणाम नहीं दे सकती|
- अगर आपको सचमुच सफलता चाहिए तो आपको सफलता पाने के लिए अपने अंदर तीव्र इच्छा जगानी ही होगी|

कहानी 46

संघर्ष हमें मजबूत बनाता है

जब मैं अपनी स्कूली शिक्षा प्राप्त कर रहा था, तो एक दिन हमारे गणित वाले सर तबीयत खराब होने की वजह से छुट्टी पर थे। उस दिन हमारा गणित का पीरियड खाली था। इसीलिए उस दिन उनकी जगह पर जीव विज्ञान (Biology) की मैडम क्लास लेने आ गईं।

उस दिन वे हमें मेहनत और संघर्ष के बारे में बताने लगीं। वे हमें बताने लगीं कि, "बच्चों, मेहनत और संघर्ष किए बिना जिंदगी में कोई भी बड़ी सफलता हासिल नहीं की जा सकती। और अगर कभी किसी को बिना मेहनत और संघर्ष किए कोई बड़ी उपलब्धि मिल भी गई, तो वह उपलब्धि ज्यादा समय तक नहीं रह सकती।"

उन्होंने हमें एक बहुत अच्छा उदाहरण देकर मेहनत और संघर्ष के महत्व के बारे में समझाने की कोशिश की।

उन्होंने हमें बताया कि कैटरपिलर को तितली में बदलने के लिए अपने खोल से बाहर आना पड़ता है, जिसके लिए उसे बहुत ज्यादा संघर्ष करना पड़ता है। उसी संघर्ष की वजह से उसके पंखों को ताकत और मजबूती मिलती है।

और अगर कोई व्यक्ति तितली के खोल को तोड़कर उसे बाहर निकलने में उसकी मदद करता है, तो तितली को बाहर निकलने में संघर्ष नहीं करना पड़ेगा। लेकिन इसका नतीजा यह होगा कि तितली के पंखों को ताकत और मजबूती नहीं मिल पाएगी| जिसकी उसे जरूरत होती है और वह ठीक से उड़ भी नहीं पाएगी। हो सकता है कि वह ज्यादा समय तक जीवित न रह पाए।"

इसीलिए जीवन में मेहनत और संघर्ष बहुत जरूरी है, क्योंकि संघर्ष हमें मजबूत बनाता है।

सीख

- जिंदगी में कोई भी कीमती चीज बिना मेहनत और संघर्ष के नहीं मिलती| बिना मेहनत और संघर्ष के मिली हुई कामयाबी ज्यादा देर तक नहीं टिकती|

कहानी 47

तीस सेकंड के पीछे तीस साल

एक प्रसिद्ध चित्रकार से जुड़ा एक प्रेरक प्रसंग है। कहा जाता है कि एक बार एक प्रसिद्ध चित्रकार सड़क पर कहीं घूम रहे थे। वहाँ एक महिला ने उन्हें देखकर पहचान लिया। वह महिला उनके पास आई और बोली, "सर, मैंने आपको पहचान लिया। आप बहुत बड़े चित्रकार हैं।"

वह महिला जल्दी से कागज़ का एक टुकड़ा लेकर आई और चित्रकार के हाथ में देते हुए बोली, "सर, आप बहुत बड़े चित्रकार हैं। क्या आप मेरे लिए इस कागज़ पर कोई चित्र बना सकते हैं?"

चित्रकार ने तीस सेकंड के अंदर पेंसिल से उस कागज़ पर एक चित्र बनाकर उस महिला को देते हुए कहा, "लीजिए मैडम, यह आपके लिए है। इस चित्र की कीमत पचास लाख रुपये है।"

उस महिला को बिल्कुल भी विश्वास नहीं हुआ कि कोई व्यक्ति सिर्फ तीस सेकंड में पचास लाख रुपये का चित्र कैसे बना सकता है।

वह महिला दो-चार जगहों पर उस चित्र की कीमत पता करने गई। यह जानकर वह महिला हैरान रह गई कि उस चित्र की कीमत सचमुच पचास लाख रुपये थी।

उस महिला ने उस चित्रकार को ढूँढ़ना शुरू किया। बहुत ढूँढ़ने के बाद एक प्रदर्शनी में उसे वह चित्रकार मिल गए। वह उनके पास जाकर बोली, "सर, आपने मुझे पहचाना? मैं आपसे मिली थी और आपने मेरे लिए यह चित्र बनाया था। आपने इसे सिर्फ तीस सेकंड में बनाया था और मुझे देते हुए कहा था कि इसकी कीमत पचास लाख रुपये है। मैंने इसकी कीमत का पता लगाया है। यह सचमुच पचास लाख रुपये का है, सर।"

चित्रकार बोले, "हाँ, मुझे याद है। मैंने ही यह चित्र बनाया है।"

वह महिला चित्रकार से बोली, "सर, मैं भी सीखना चाहती हूँ कि तीस सेकंड में पचास लाख रुपये का चित्र कैसे बनाया जाता है।"

इस पर चित्रकार ने कहा, "देखिए मैडम जी, जो चित्र आपने तीस सेकंड में बना हुआ देखा है, उसे बनाने में मुझे तीस साल लग गए। अगर आप भी तीस साल मेहनत करने के लिए तैयार हैं, तो मैं आपको सिखाने के लिए तैयार हूँ।"

उस औरत के पास चित्रकार की इस बात का कोई जवाब नहीं था।

सीख

- हमें केवल कामयाब लोगों की कामयाबी को ही नहीं देखना चाहिए, बल्कि उस कामयाबी के पीछे की गई उनकी सालों की कड़ी मेहनत को भी देखना चाहिए।
- अगर आप भी किसी सफल व्यक्ति की तरह सफलता चाहते हैं, तो आपको भी उसकी तरह ही सालों तक कड़ी मेहनत और लगातार अभ्यास करना होगा।

कहानी 48

रस्सी नहीं, सोच बाँधती है

हाथी और रस्सी की यह कहानी एक बहुत प्रसिद्ध प्रेरक प्रसंग के रूप में सुनाई जाती है। कहा जाता है कि एक बार एक व्यक्ति घूमता हुआ हाथियों के झुंड के पास से गुजर रहा था। वहाँ उसने देखा कि कुछ बड़े-बड़े हाथी पतली-पतली रस्सियों की मदद से पेड़ों से बँधे हुए थे।

साफ दिखाई दे रहा था कि सभी हाथी बड़ी आसानी से उन पतली रस्सियों को तोड़कर किसी भी समय भाग सकते थे, लेकिन वे ऐसा नहीं कर रहे थे।

इस दृश्य को देखकर उस व्यक्ति ने हाथियों के प्रशिक्षक से पूछा, "ये विशाल हाथी इतनी पतली-पतली रस्सियों से बँधे हुए हैं। ये सभी जब चाहें, तब इन रस्सियों को तोड़कर आज़ाद हो सकते हैं, मगर फिर भी ये ऐसा नहीं कर रहे हैं। क्या आप बता सकते हैं कि कोई भी हाथी रस्सी तोड़कर आज़ाद होने की कोशिश क्यों नहीं कर रहा है?"

इस पर प्रशिक्षक ने बताया, "जब ये हाथी छोटे थे, तब हम इन्हें इन्हीं पतली रस्सियों से पेड़ों से बाँधा करते थे। उस समय ये सभी हाथी रस्सियों को तोड़ने की बहुत कोशिश करते थे, मगर कम ताकत होने की वजह से कोई भी हाथी रस्सी को तोड़ नहीं पाता था।

धीरे-धीरे जब ये हाथी शरीर से बड़े और मजबूत हो गए, तब ये चाहते तो इन पतली रस्सियों को आसानी से तोड़ सकते थे, लेकिन इन्होंने ऐसा कभी नहीं किया। इनके मन में बचपन से ही यह बात बैठ गई थी कि वे इस रस्सी को नहीं तोड़ सकते।"

इसी प्रकार, लगातार मिल रही असफलताओं के कारण कुछ लोग यह मान लेते हैं कि शायद उनकी किस्मत ही खराब है या वे कभी सफल नहीं हो सकते।

सीख

- लगातार मिल रही असफलताओं के बावजूद हमें प्रयास करना कभी बंद नहीं करना चाहिए। हो सकता है कि आज हमें सफलता न मिले, लेकिन अगर हम लगातार प्रयास करते रहेंगे, तो एक दिन सफलता जरूर मिलेगी।

कहानी 49

हीरों की तलाश

रघुराज एक छोटा-सा किसान था। वह अपने खेतों में हल चलाकर अपना गुजर-बसर करता था। एक दिन एक आदमी उसके पास आया और उसने रघुराज को हीरों के महत्व और उनसे जुड़ी ताकत के बारे में बताया। उसने रघुराज से कहा, "अगर तुम्हारे पास एक छोटा-सा भी हीरा हो, तो तुम पूरा गाँव खरीद सकते हो, और अगर तुम्हारे पास दस-बीस हीरे हों, तो तुम पूरा शहर खरीद सकते हो। अगर तुम्हारे पास सौ-दो सौ हीरे हों, तो तुम एक छोटा-मोटा देश भी खरीद सकते हो।"

वह आदमी इतना कहकर चला गया। उस रात रघुराज सो ही नहीं सका। वह सारी रात हीरों के बारे में ही सोचता रहा।

अगले दिन सुबह होते ही रघुराज ने अपने खेत और पशु बेच दिए और अपने परिवार की देखभाल का इंतजाम किया। उसके बाद वह खुद हीरे खोजने के लिए रवाना हो गया। वह हीरों की खोज में पूरे देशभर में भटकता रहा, पर उन्हें पा नहीं सका। उसने विदेशों में भी हीरे ढूँढ़े, लेकिन हीरे उसे वहाँ भी नहीं मिले।

कई वर्षों तक हीरे न ढूँढ़ पाने के कारण वह मानसिक, शारीरिक और आर्थिक स्तर पर पूरी तरह टूट चुका था। वह कई वर्षों बाद हार-थककर अपने गाँव वापस आया और फिर से अपने परिवार के साथ रहने लगा। लेकिन अब उसके पास न खेत थे और न पशु। उन सबको वह पहले ही बेच चुका था।

इधर दूसरी तरफ, जिस आदमी ने रघुराज का खेत खरीदा था, वह एक दिन खेत में हल चला रहा था। तभी सुबह के समय उगते सूरज की किरणें खेत में पड़े एक पत्थर पर पड़ीं और वह पत्थर एकदम जगमगा उठा। उसने वह पत्थर उठाया और अपने एक मित्र को दिखाया, जो हीरों

का व्यापारी था। उसने उस पत्थर की जाँच की और उसे बताया कि यह हीरा है।

नए मालिक ने अगले ही दिन अपने खेत की खुदाई करवाई। यह क्या! उसके खेत के नीचे हीरों की पूरी एक खदान थी। उसके खेत में दूर-दूर तक हीरे दबे हुए थे।

रघुराज को जब इस बात का पता चला, तो वह अपना सिर पीटने लगा और सोचने लगा, "मैंने हीरों की खोज में अपनी जिंदगी के कई वर्ष लगा दिए और देश-विदेश में हीरों की खोज की, मगर मुझे हीरे कहीं भी नहीं मिले। काश! मैंने हीरे ढूँढ़ने की शुरुआत अपने ही खेत से की होती, तो मुझे हीरे कब के मिल गए होते।"

सीख

- मौकों को कहीं बाहर न ढूँढ़ें। मौके हमारे आसपास ही छिपे होते हैं। मौकों को पहचानकर उन्हें भुनाने की कोशिश करें।

कहानी 50

जानते हो, तो फिर करते क्यों नहीं?

जब मैं अपनी यह किताब लिख रहा था, तब मुझे अपना एक पुराना दोस्त एक पार्टी में मिला। हमने बातें करनी शुरू कीं तो पता चला कि वो अभी तक जिंदगी के किसी भी क्षेत्र में कुछ खास नहीं कर सका है। ना तो पढ़ाई में, न ही नौकरी में, न ही व्यापार में, वो अभी तक अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में असफल ही रहा है। ऊपर से उसने सिगरेट और शराब पीना भी शुरू कर दिया है। वो मुझसे बात करते वक्त भी सिगरेट के कश लगा रहा था। जब मैंने उसे बताया कि मैं एक किताब लिख रहा हूँ तो उसने मुझसे कहा कि यार, मुझे भी जिंदगी में कामयाब होने के लिए कोई गुरु मंत्र दे-दे, जिससे मेरा भी कुछ भला हो सके।

तो मैंने उसे आदतों के बारे में बताया कि हमें अच्छी आदतें अपनानी चाहिए और बुरी आदतों से दूर रहना चाहिए। अच्छी आदतों से हमें क्या-क्या फायदे होते हैं और बुरी आदतों से हमें क्या-क्या नुकसान होते हैं, ये सब कुछ मैंने उसे बताया।

वो सुट्टा मारते हुए बोला, "ये सब तो मुझे पता है, कुछ नया बता यार! "

फिर मैंने उसे किताबें पढ़ने के बारे में बताया कि किताबें पढ़ने से हमें क्या-क्या फायदे होते हैं। हमारा ज्ञान बढ़ता है और ना जाने कितने फायदे होते हैं।

वो बीच में मुझे रोकते हुए बोला कि ये सब भी मुझे पता है। तू मुझे कुछ नया बता यार!

इसके बाद मैंने उसको समय प्रबंधन और अच्छे लोगों की संगति के बारे में बताना शुरू किया।

वो दूसरी सिगरेट जलाते हुए मुझसे बोला कि ये सब भी मुझे पता है, तू मुझे कुछ नया बता यार!

उसके बाद भी मैं रुका नहीं। मैंने उसको और भी कई सारी बातें बताईं, जिनको अपनाकर वो जिंदगी में सफल इंसान बन सके।

मगर मेरी उन सभी बातों को सुनकर भी जानते हो उसने क्या कहा?

उसने कहा, ये सब तो मुझे पता है.... कुछ नया बता यार!

सफलता पाने के लिए जो-जो बातें जरूरी थीं, उसे वो सारी बातें पता थीं, मगर सब कुछ पता होने के बावजूद भी वो असफल था।

हम में से भी ज्यादातर लोग ऐसे ही हैं। हम सभी को लगभग सब कुछ पता होता है कि किन-किन कामों को करने से सफलता मिलेगी, मगर फिर भी हम असफल ही रहते हैं। जानते हो क्यों?

क्योंकि हमें सफलता प्राप्त करने के लिए जो-जो जरूरी बातें पता होती हैं, हम उनको अपने जीवन में कभी अपनाते ही नहीं हैं। हम सोचते हैं कि सिर्फ सफलता के लिए जरूरी बातों को जानने से ही हमें सफलता मिल जाएगी।

याद रहे, सफलता के नियम तब तक काम नहीं करते, जब तक हम काम नहीं करते। दुनिया में कोई भी व्यक्ति सफलता के बारे में अच्छी-अच्छी बातें पढ़कर, सुनकर या जानकर सफल नहीं होता, बल्कि वो सफल तब होता है जब वो उन बातों को अपने जीवन में उतारता है।

सीख

- कोई भी इंसान सिर्फ अच्छी-अच्छी बातें पढ़कर, सुनकर या जानकर सफल नहीं बन जाता, बल्कि इंसान सफल तब बनता है जब वो उन बातों को अपने जीवन में उतारता है।

संदर्भ एवं प्रेरणा

कहानी 1 - एम. आर. कोप कॉपमेयर, *हाउ टू गेट व्हाटएवर यू वॉन्ट*

कहानी 2 - *अमिताभ बच्चन के सार्वजनिक साक्षात्कार एवं वक्तव्यों; पंकज त्रिपाठी के सार्वजनिक साक्षात्कार एवं जीवन प्रसंगों पर आधारित*

कहानी 3 - *पारंपरिक प्रेरक प्रसंग; सचिन तेंदुलकर और रमाकांत आचरेकर के सार्वजनिक साक्षात्कार एवं जीवन प्रसंगों से संबंधित संदर्भ*

कहानी 4 - *लेखक के व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित*

कहानी 5 - कहानी 6 *प्रचलित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 7 - *रामायण के पारंपरिक प्रसंग एवं लेखक के व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित।*

कहानी 8 - कहानी 13 *प्रचलित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 14 - *मोहम्मद अली के प्रसिद्ध कथन "द विल मस्ट बी स्ट्रॉन्गर दैन द स्किल" से प्रेरित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 15 - कहानी 16 *प्रचलित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 17 - *मेजर देवेंद्र पाल सिंह के जीवन प्रसंग पर आधारित; सार्वजनिक रूप से उपलब्ध साक्षात्कार एवं जीवनी संबंधी सामग्री*

कहानी 18 - *कैरोली तकाच के जीवन एवं ओलंपिक उपलब्धियों पर आधारित; इंटरनेशनल शूटिंग स्पोर्ट फेडरेशन (ISSF) तथा ओलंपिक संबंधी सार्वजनिक अभिलेखों से संदर्भित*

कहानी 19 - *प्रचलित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 20 - *शिव खेड़ा, यू कैन विन, लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 21 - *प्रचलित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 22- *डॉ. नॉर्मन विंसेंट पील, द पावर ऑफ पॉजिटिव थिंकिंग; अमिताभ बच्चन एवं हरिवंश राय बच्चन से संबंधित सार्वजनिक रूप से उपलब्ध प्रसंग*

कहानी 23 - *शिव खेड़ा की प्रेरक शिक्षाओं से प्रेरित; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 24 - *अब्राहम लिंकन के जीवन एवं सार्वजनिक जीवनी संबंधी प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 25 - कहानी 29 *प्रचलित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 30 - *महाभारत के आदि पर्व, संभ व पर्व, अध्याय 135 में वर्णित द्रोणाचार्य और अर्जुन के प्रसंग पर आधारित; लेखक द्वारा पुनर्कथित।*

कहानी 31 - *प्रचलित प्रेरक प्रसंग एवं लेखक के व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 32 - कहानी 33 *प्रचलित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 34 - *"बॉयलिंग फ्रॉग" रूपक पर आधारित प्रचलित प्रेरक उदाहरण; लेखक द्वारा स्वतंत्र रूप से पुनर्कथित एवं प्रस्तु*

कहानी 35 - कहानी 36 *प्रचलित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 37 - *लेखक के व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित*

कहानी 38 - कहानी 45 *प्रचलित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित*

कहानी 46 - लेखक के व्यक्तिगत अनुभव एवं प्रचलित प्रेरक प्रसंग पर आधारित; लेखक द्वारा पुनर्कथित

कहानी 47 - कहानी 48 प्रचलित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित

कहानी 49 - रसेल एच. कॉनवेल की एकर्स ऑफ डायमंड्स से संबंधित प्रेरक प्रसंग; लेखक द्वारा पुनर्कथित

कहानी 50 - लेखक के व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित

सूचना

इस पुस्तक में शामिल कुछ कहानियाँ प्रचलित कहानियों, ऐतिहासिक घटनाओं और सार्वजनिक रूप से उपलब्ध सामग्री से प्रेरित हैं। जहाँ संभव हुआ है, वहाँ संबंधित स्रोत का उल्लेख किया गया है। इन कहानियों को लेखक द्वारा सरल हिंदी में पुनर्कथित एवं प्रस्तुत किया गया है।यदि किसी कहानी, तथ्य या स्रोत में कोई त्रुटि या अनजाने में गलत जानकारी रह गई हो, तो कृपया लेखक को सूचित करें, ताकि आवश्यक सुधार आगामी संस्करण में किया जा सके।आशा है कि इस पुस्तक को पढ़ने में बिताया आपका कीमती समय आपको कुछ नई सीख, नया दृष्टिकोण और जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देगा। इस पुस्तक का उद्देश्य केवल कहानियाँ सुनाना नहीं, बल्कि उन कहानियों में छिपी सीख को आपके जीवन तक पहुँचाना है। अपना कीमती समय देकर इस पुस्तक को पढ़ने के लिए आपका हृदय से धन्यवाद।

Contact: sandynagar079@gmail.com